

प्रधानमंत्री कार्यालय

# जनऔषधि दिवस के अवसर पर पीएम जन औषधि परियोजना के लाभार्थियों के साथ प्रधानमंत्री की बातचीत का मूलपाठ

प्रविष्टि तिथि: 07 MAR 2020 5:00PM by PIB Delhi

नमस्कार !!

टेक्नालॉजी के माध्यम से देशभर के हजारों जनऔषधि केंद्रों से जुड़े सभी साथियों को होली की मुबारक और आप सबका इस कार्यक्रम में बहुत-बहुत स्वागत है। अनेक केंद्रों में मंत्रिमंडल के मेरे तमाम साथी भी मौजूद हैं। आप सभी को दूसरे जनऔषधि दिवस की बहुत-बहुत बधाई !!

आज हफ्तेभर से मनाए जा रहे जनऔषधि सप्ताह का भी आखिरी दिन है। इस प्रशंसनीय पहल के लिए भी मैं सभी जनऔषधि केंद्रों के संचालकों का भारत सरकार का, और इसमें सहयोग देने वाले सबका बहुत-बहुत अभिनंदन!!

साथियों,

जनऔषधि दिवस सिर्फ एक योजना को सेलिब्रेट करने का दिन नहीं है, बल्कि उन करोड़ों भारतीयों, लाखों परिवारों के साथ जुड़ने का दिन है, जिनको इस योजना से बहुत राहत मिली है, उनके माध्यम से और लोगों तक भी इस बात का व्यापक प्रचार करने का भी ये अवसर है। ताकि गरीब से गरीब व्यक्ति भी इस योजना का लाभ अवश्य लें। हर भारतवासी के स्वास्थ्य के लिए हम 4 सूत्रों पर काम कर रहे हैं।

पहला, कि हर भारतीय को बीमार होने से बचाया जाए।

दूसरा, बीमारी की स्थिति में सस्ता और अच्छा इलाज मिले।

तीसरा, इलाज के लिए बेहतर और आधुनिक अस्पताल हों, पर्याप्त संख्या में अच्छे डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ हो, ये सुनिश्चित किया जा रहा है। और,

चौथा सूत्र है, मिशन मोड पर काम करके चुनौतियों को सुलझाने का।

प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना यानि पीएम-बीजेपी, इसी की एक अहम कड़ी है। ये देश के हर व्यक्ति तक सस्ता और उत्तम इलाज पहुंचाने का संकल्प है। मुझे बहुत संतोष है कि अब तक 6 हजार से अधिक जनऔषधि केंद्र पूरे देश में खुल चुके हैं। जैसे-जैसे ये नेटवर्क बढ़ रहा है, वैसे-वैसे इसका लाभ भी और अधिक लोगों तक पहुंच रहा है। आज हर महीने एक करोड़ से अधिक परिवार इन केंद्रों के माध्यम से बहुत सस्ती दवाइयों का लाभ ले रहे हैं।

जैसा कि आपने अनुभव भी किया है, जनऔषधि केंद्रों पर मिलने वाली दवाओं की कीमत बाजार से 50 प्रतिशत से 90 प्रतिशत तक कम होती है। जैसे कैंसर की बीमारी के इलाज में उपयोग होने वाली एक दवा जो बाजार में करीब साढ़े 6 हजार रुपए की मिलती है, वो जनऔषधि केंद्रों पर सिर्फ साढ़े 8 सौ में उपलब्ध है। इससे पहले की तुलना में इलाज पर खर्च बहुत कम हो रहा है।

मुझे बताया गया है कि अभी तक पूरे देश में करोड़ों गरीब और मध्यम वर्ग के साथियों को पहले जो खर्चा होता था दवाई के लिए और अब जो खर्चा हो रहा है करीब-करीब दो-ढाई हजार करोड़ रुपए इसकी बचत ये जन औषधि केंद्रों से जो दवाइयां ली उसके कारण हुआ है। हमारे देश के एकाद-करोड़ परिवार के दो-ढाई हजार करोड़ रुपए बचना ये अपने आप में उनकी बहुत बड़ी मदद है। 2200 करोड़ रुपए की बचत जनऔषधि केंद्रों के कारण हुई है।

साथियों,

आज के इस कार्यक्रम में जनऔषधि केंद्र चलाने वाले साथी भी जुड़े हैं। आप सभी प्रशंसनीय काम कर रहे हैं। आपके इस काम को पहचान दिलाने के लिए सरकार ने इस योजना से जुड़े पुरस्कारों की शुरुआत करने का भी फैसला लिया है।

मुझे विश्वास है कि इन पुरस्कारों से जनऔषधि के क्षेत्र में एक नई स्वस्थ स्पर्धा शुरू होगी, जिसका लाभ गरीब को, मध्यम वर्ग को मिलने वाला है। देश को मिलेगा।

आइए आज की चर्चा की शुरुआत करते हैं-

मुझे कहा गया है कि सबसे पहले असम के गुवाहाटी चलना है।

**प्रश्न: 1 प्रधानमंत्री जी, मेरा नाम अशोक कुमार बेटाला है और मैं असम के गुवाहाटी से हूँ। मेरी उम्र 60 वर्ष है।**

**मुझे डायबिटीज़ और बल्ड प्रेशर की समस्या है, मैं हार्ट पेशेंट भी हूँ। 5 साल पहले मेरी सर्जरी भी हो चुकी है, तभी से मैं दवाइयाँ ले रहा हूँ। पिछले 10 महीने से मैं जनऔषधि केंद्र से लगातार दवाएं ले रहा हूँ।**

**जब से जनऔषधि केंद्र से दवाएं लेनी शुरू की हैं, तब से मुझे 2500 रुपए की बचत हर महीने हो रही है। इस बचत के पैसे का उपयोग मैं अपनी पोती के नाम पर सुकन्या समृद्धि योजना खाते में जमा कर पा रहा हूँ।**

**आप का ऐसी योजनाओं के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद !!**

**आपने मेरी टेंशन तो कम कर दी है, लेकिन ये जो कोरोना वायरस की टेंशन है, इसको लेकर कई बातें चल रही हैं। इस वायरस से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?**

उत्तर: 1

पहले तो आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। जनऔषधि के कारण जो बचत आपकी हो रही है, उसका उपयोग आप अपनी पोती के बेहतर भविष्य में लगा रहे हैं। जहां तक आपने कोरोना वायरस की बात की, तो ये सही है कि बहुत से लोग इसे लेकर बहुत चिंता में हैं।

मैं समझता हूँ इसमें आपकी और हमारी सतर्कता बहुत महत्वपूर्ण है। चाहे केंद्र सरकार हो या हमारी तमाम राज्य सरकारें हों, सभी इस मामले को लेकर उचित इंतज़ाम और देखरेख कर रही हैं। हमारे पास कुशल डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ भी हैं, संसाधन भी हैं और जागरूक नागरिक भी हैं। हमें बस अपनी सावधानियां में कोई कमी नहीं आने देनी है। ये सावधानियां क्या हैं, ये अलग-अलग माध्यमों से आपको बताया जा रहा है। मैं फिर आपके सामने दोहरा रहा हूँ।

साथियों,

एक तो हमें बिना ज़रूरत के कहीं इकट्ठा होने से बचना होगा और दूसरा हमें बार-बार, जितना हो सके अपने हाथ धोते रहना चाहिए। अपने चेहरे को, अपने नाक और अपने मुंह को बार-बार छूने की हमारी एक आदत होती है। जितना हो सके, इस आदत को हमें कंट्रोल करना है और धुले हुए हाथों से ही अपने मुंह को टच करना है। जानकारों का कहना है कि ये खांसते या छींकते समय जो छींटे निकलते हैं, उसके संपर्क में आने से फैलता है। ऐसे में जिस भी चीज पर ये छींटे गिरते हैं, उसमें ये वायरस कई दिनों तक जीवित रह सकता है। इसलिए बार-बार साबुन से हाथ धोना ज़रूरी होता है। एक और आदत हमें ज़रूर डालनी है। अगर खांसी और छींक हमें आती है तो कोशिश यही करनी है कि दूसरों पर इसके छींटे न पड़ें और जो कपड़ा या रुमाल हमने छींकने समय इस्तेमाल किया होता है, उसे भी दूसरों के संपर्क में न आने दें।

साथियों,

जिन साथियों को ये संक्रमण हुआ है, उनको तो ज़रूरी निगरानी में रखा ही जा रहा है। लेकिन अगर किसी साथी को शक होता है कि वो किसी संक्रमित साथी के संपर्क में आया है, तो उसको बहुत घबराने की ज़रूरत नहीं है। अपने मुंह को मास्क से ढंककर या किसी कपड़े से ढककर पहले किसी नज़दीकी अस्पताल में चैक अप कराने के लिए चले जाएं। परिवार में जो बाकी लोग होते हैं उनको भी infection होने की आशंका ज्यादा होती है, ऐसे में उनको भी ज़रूरी टेस्ट करा लेने चाहिए। ऐसे साथियों को मास्क भी पहनने चाहिए, गलब्स भी पहनने चाहिए और दूसरों से कुछ दूरी बनाकर रहना चाहिए।

मास्क पहनना है या नहीं पहनना है, इसे लेकर जानकारों की अलग-अलग राय है, लेकिन ध्यान यही रखना है कि खांसते या छींकते समय उसके छींटे या Droplets दूसरों पर न जाएं। वैसे मास्क पहनते समय भी एक चीज ध्यान रखनी है। मास्क को अडजस्ट करते हुए हमारा हाथ बार-बार मुंह को छूता है। इससे बचाव की जगह infection फैलने की आशंका बढ़ जाती है।

साथियों,

ऐसे समय में अफवाहें भी तेज़ी से फैलती हैं। कोई कहता है ये नहीं खाना है, वो नहीं करना है, कुछ लोग चार नई चीजें लेकर आ जाएंगे कि ये खाने से कोरोना वाइरस से बचा जा सकता है। हमें इन अफवाहों से भी बचना है। जो भी करें, अपने डॉक्टर की सलाह से करें। और हां, पूरी दुनिया नमस्ते की आदत डाल रही है। अगर किसी कारण से हमने ये आदत छोड़ दी है, तो हाथ मिलाने के बजाय इस आदत को फिर से डालने का भी ये उचित समय है।

मोदी जी को सादर प्रणाम सर मेरा नाम मुकेश अग्रवाल है मैं देहरादून में कई जनऔषधि केंद्रों का संचालन करता हूँ और ये प्रेरणा मुझे इसलिए मिली है कि यहां पर कुछ मरीज़ ऐसे थे जो दयनीय स्थिति में थे मैं उनकी मदद करना चाहता था पर मंहगी दवाईयां होने के कारण मैं उनको सहमत नहीं हो पाता था तब ये जन औषधि केंद्रों का पता लगा माननीय मुख्यमंत्री जी से हमारा सहयोग है तो फिर हमने इसके लिए प्रयास किया हमने चैरिटेबल प्रयास ट्रस्ट बनाया हमने लोगों को मुफ्त दवाईयां भी दी हैं। सस्ती दवाईयो का हम डिस्प्ले करते हैं।

**प्रश्न- 2 नमस्कार प्रधानमंत्री जी !!**

मेरा नाम दीपा शाह है। मैं देहरादून उत्तराखंड से हूँ। मेरी आयु 65 वर्ष है।

मुझे 2011 में पैरालिसिस हुआ था। तब से ही मैं दवाएं ले रही हूँ। लेकिन 2015 से मैं जनऔषधि केंद्र से दवाएं ले रही हूँ। मेरे पति भी दिव्यांग हैं। ऐसे में हर महीने में पहले के मुकाबले हमारा खर्च 3000 रुपए कम हुआ है। मेरा अनुभव है कि ये दवाएं सस्ती भी हैं और अच्छी क्वालिटी की भी हैं। पहले बात करने में और चलने फिरने में मुझे बहुत दिक्कत होती थी, अब इसमें काफी सुधार है। लेकिन, लोगों में अभी भी Generic दवाओं को लेकर कुछ भ्रम हैं। ऐसे भ्रम को दूर करने के लिए क्या किया जाए ?

## उत्तर - 2

आपने सही कहा कि Generic दवाओं को लेकर अफवाहें फैलाएं जाती हैं। पुराने अनुभवों के आधार पर कुछ लोगों को ये भी लगता है कि आखिर इतनी सस्ती दवा कैसे हो सकती है, कहीं कोई खोट तो इसमें नहीं है। कहीं रंगीन गोलियां बनाकर तो कोई नहीं दे रहा है ऐसे भ्रम फैलाएं जाते हैं। लेकिन दीपा जी आपको देखकर के पूरे देशवासियों को विश्वास होगा कि generic दवाओं की ताकत क्या है आज आपने सबूत के साथ उसको पेश किया है। मैं समझता हूँ किसी laboratory से बड़ा दीपा जी आपका अनुभव है।

ऐसे सभी साथियों को मैं बता दूँ कि ये दवाएं दुनियाभर के बाजार में उपलब्ध किसी भी दवाई से ज़रा भी कम नहीं है। ये दवाएं बेहतरीन लैब्स से सर्टिफाइड होती हैं, हर प्रकार की सख्त जांच से निकले दवा निर्माताओं से खरीदी जाती हैं। यदि किसी दवा निर्माताओं के विरुद्ध शिकायतें आती हैं, तो उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाती है।

ये दवाएं भारत में ही बनती हैं, इसलिए सस्ती हैं। भारत की बनी Generic दवाओं की पूरी दुनिया में डिमांड है। सरकार ने हर अस्पताल के लिए Generic दवाएं लिखना ज़रूरी कर दिया है। कुछ विशेष परिस्थितियों को छोड़कर डॉक्टर Generic दवाएं ही लिखें, ये सुनिश्चित करना ज़रूरी है। मेरा आप सभी लाभार्थियों से भी निवेदन रहेगा कि अपने अनुभवों को अधिक से अधिक साझा करें। इससे जनऔषधि का लाभ ज्यादा से ज्यादा मरीजों तक पहुंच सकेगा।

## प्रश्न- 3 नमस्कार प्रधानमंत्री जी !!

मैं ज़ेबा खान हूँ। मैं पुणे से हूँ। मेरी age 41 साल है।

मैं किडनी की patient हूँ और जनऔषधि केन्द्र की दवाओं से मुझे इलाज में बहुत मदद मिल रही है।

पिछले 6 महीने से मैं जनऔषधि केंद्र से दवाएं ले रही हूँ। पहले की तुलना में मुझे 14-15 सौ रुपए हर महीने कम खर्च करने पड़ रहे हैं। ये जितना भी मैं बचा पाती हूँ, उससे मेरी तीन बेटियों की पढ़ाई-लिखाई में बहुत मदद होती है।

जनऔषधि केंद्रों के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आपने दवाइयां सस्ती कीं, स्टेंट भी बहुत सस्ते किए, 5 लाख तक मुफ्त इलाज भी तय कर दिया। योग और आयुर्वेद को लेकर भी आप हमेशा बात करते रहते हैं।

अब आपसे गरीब और मिडिल क्लास की उम्मीदें और बढ़ गई हैं। करोड़ों लोगों की उम्मीदों के प्रेशर को आप कैसे हैंडल करते हैं?

## उत्तर-3

सबसे पहले तो मैं आपकी बेहतर सेहत की कामना करता हूँ। आपकी बेटियों के बेहतर भविष्य के लिए भी शुभकामनाएं। मुझे विश्वास है कि आप जरूर इस दवाई से आपको जो लाभ हुआ है दो प्रकार के लाभ हुए हैं एक तो आपने सर्वाधिक मंहगी और कष्टदायक स्थिति से निकली हैं और उससे कम से कम आपको आर्थिक मदद मिल गई। और इस व्यवस्था से जाने के कारण अब आपको दवाइयां सस्ती मिली है, डाइलिसिस की सुविधा भी मिली है। और आप अपने परिवार की बी अच्छी देखभाल कर पा रही है। मैं समझता हूँ कि जब सरकार की कोई योजना पूरे परिवार का हित करती है पूरे समाज का हित करती है तो वो अपने आप में आशीर्वाद का कारण बनती है।

देखिए, जब आप जैसे देश के करोड़ों साथियों के जीवन में आने वाले बदलाव के बारे में सुनता हूँ तो प्रेशर के लिए गुंजाइश ही नहीं बचती। मैं अपेक्षा को दबाव नहीं मानता बल्कि प्रोत्साहन मानता हूँ।

देश के गरीब को, मध्यम वर्ग को ये विश्वास हुआ है कि उनकी सरकार उसको उत्तम, सस्ता और सुलभ इलाज देने में जुटी है। इससे अपेक्षा जितनी बढ़ी है, उतने ही हमारे प्रयास भी व्यापक हो रहे हैं।

अब देखिए, करीब-करीब 90 लाख गरीब मरीजों को आयुष्मान भारत योजना के तहत इलाज मिल चुका है। प्रधानमंत्री डायलिसिस प्रोग्राम के तहत 6 लाख से अधिक का मुफ्त में डायलिसिस किया जा चुका है।

यही नहीं, एक हजार से अधिक जरूरी दवाइयों की कीमत नियंत्रित होने से मरीजों के 12,500 करोड़ रुपये बचे हैं। स्टैंट्स और नी-इम्प्लांट्स की कीमत कम होने से लाखों मरीजों को नया जीवन मिला है। साल 2025 तक देश को टीबी मुक्त करने की दिशा में हम तेज़ी से काम कर रहे हैं। इस योजना के तहत देश के गांव-गांव में आधुनिक Health and Wellness Centre बनाए जा रहे हैं। अभी तक जो 31 हजार से ज्यादा सेंटर तैयार हो चुके हैं, उनमें 11 करोड़ से ज्यादा साथी अपनी जांच करा चुके हैं।

इनमें करीब साढ़े 3 करोड़ हाइपरटेंशन, करीब 3 करोड़ डाइबिटीज, 1 करोड़ 75 लाख Oral कैंसर, 70 लाख सर्वाइकल कैंसर, 1 करोड़ से ज्यादा Breast कैंसर, ऐसी अनेक गंभीर बीमारियों की स्क्रीनिंग इन सेंटर्स पर हो चुकी है। प्रयास ये है कि देश में लोगों को मेडिकल सुविधा के लिए ज्यादा दूर ना जाना पड़े। इसलिए देशभर में 22 नए AIIMS बनाए जा रहे हैं। देशभर में 75 जिला अस्पतालों को मेडिकल कॉलेज में बदला गया है, जिससे नए स्वीकृत मेडिकल कॉलेज की संख्या 157 हो चुकी है।

इसी वर्ष देश में 75 नए मेडिकल कॉलेज बनाने की स्वीकृति दी गई है, जिससे देश में मेडिकल की 4 हजार से अधिक PG और लगभग 16 हजार MBBS सीटों की बढ़ोतरी होगी। उचित मात्रा में अच्छे डॉक्टर और दूसरा मेडिकल स्टाफ तैयार हो, इसके लिए जरूरी कानूनी बदलाव किए जा रहे हैं। नेशनल मेडिकल कमीशन इसी दिशा में उठाया गया कदम है।

देश में बेहतर दवाओं के निर्माण के लिए, रिसर्च और क्लिनिकल ट्रायल के लिए नियम बनाए गए हैं। हाल में आपने सुना होगा कि सभी मेडिकल उपकरणों को भी दवाइयों की परिभाषा के दायरे में लाया गया है। भारत में जब ये दवाएं और दूसरा सामान अधिक से अधिक बनेगा तो इनकी कीमत में और कमी आना स्वभाविक है। ऐसे अनेक प्रयास चल रहे हैं, जो देश में स्वास्थ्य सुविधाओं में व्यापक सुधार लाने वाले हैं।

**प्रश्न 4 मेरा नाम अलका मेहरा है। मेरी आयु 45 वर्ष है। मैं आपके शहर वाराणसी से हूँ। कल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। मैं खुद भी जनऔषधि केंद्र चलाती हूँ। जनऔषधि केंद्र में मात्र 1 रुपए में सेनिटेरी पैड आज उपलब्ध हो रहे हैं, जिससे ग्रामीण महिलाओं को बहुत लाभ हो रहा है। ऐसी ही अनेक योजनाएं हैं जो महिलाओं के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए आपने चलाई हैं।**

**चाहे टॉयलेट हो, सेनिटेरी पैड हो, उज्जवला हो, आपने समाज की पुरानी सोच को चुनौती दी। इन फैसलों को लेकर कभी चिंता आपके मन में नहीं आई कि, समाज कैसे रिएक्ट करेगा?**

उत्तर- 4

अलका जी हर हर महादेव!

आप सभी को, देशभर की बहनों को, बेटियों को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस की अग्रिम बधाई। जैसा कि आपको पता है कि कल मेरा सोशल मीडिया अकाउंट कुछ बहनें ही हैंडल करने वाली हैं। बीते हफ्तेभर से अनेक बहनों के प्रेरक प्रसंग देशभर से बहनें भेज रही हैं, जो उत्साहित करने वाला है और देश की नारी शक्ति के सामर्थ्य के बारे में अदभुत जानकारी देने वाला भी है। जहां तक आपने महिला स्वास्थ्य को लेकर पुरानी सोच की बात है, तो उससे देश को बाहर निकालने के लिए ही तो हमें काम करना है।

अगर कोई बात सही है, तो मेरा हमेशा से ये मत रहा है कि समाज भी उस बात को जरूर समझता है, बस एक कदम उठाने वाले की जरूरत होती है। यही इन योजनाओं में भी हुआ। सरकार ने सिर्फ एक कदम उठाया, बाकी का काम खुद उसी समाज ने किया।

इन योजनाओं का परिणाम ये हुआ है कि आज महिला स्वास्थ्य में अभूतपूर्व सुधार हो रहा है। बेटियों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है। स्कूलों में अलग टॉयलेट बनने से बेटियां अब बीच में स्कूल नहीं छोड़तीं। सुरक्षित मातृत्व अभियान से माता और शिशु दोनों के जीवन पर खतरा बहुत कम हुआ है।

प्रधानमंत्री मातृवृंदना योजना के तहत देश की 1 करोड़ 20 लाख महिलाओं को लगभग 5 हजार करोड़ रुपए सरकार द्वारा सीधे उनके बैंक खातों में ट्रांसफर किए गए हैं। मिशन इंद्रधनुष के तहत 3 करोड़ 50 लाख शिशुओं और लगभग 90 लाख से ज्यादा गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण हो चुका है। जनऔषधि योजना का लाभ भी तो समाज के हर वर्ग को हुआ है, गरीब और मध्यम वर्ग को हुआ है। इसमें भी हमारी बेटियां, बहनों को विशेष लाभ हुआ है। आज के इस कार्यक्रम में भी अनेक बहनें जुड़ी हुई हैं।

मार्केट में 10 रुपए तक मिलने वाले सेनिटेरी पैड आज जनऔषधि केंद्रों में 1 रुपए में उपलब्ध हैं। आपको याद होगा कि चुनाव के दौरान हमने कहा था कि जनऔषधि केंद्रों पर ढाई रुपए के पैड की कीमत 1 रुपए की जाएगी। इस वादे को पहले 100 दिन में ही पूरा किया गया। ये सेनिटेरी नेपकिन सस्ते भी हैं और पर्यावरण के अनुकूल भी हैं। आप ज्यादा से ज्यादा बेटियां तक इस लाभ को पहुंचाने में जुटी हैं। भोले बाबा आपको और शक्ति दे, सामर्थ्य दे, अच्छा स्वास्थ्य दे, ये मेरी कामना है।

**प्रश्न-5 नमस्कार प्राइम मिनिस्टर साहब ! मेरा नाम गुलाम नबी डार है। मैं जम्मू कश्मीर के पुलवामा से हूँ। मैं 74 साल का हूँ। मुझे थायरॉयड, ब्लड प्रेशर, गैस्ट्रो, की दिक्कत है। मुझे डॉक्टरों ने लगातार दवाएं लेने के लिए एडवाइस किया है। पहले बाज़ार से मैं दवाइयां लेता था, लेकिन बीते 2 ढाई साल से जनऔषधि केंद्र से ले रहा हूँ। मेरी मंथली इनकम 20-22 हजार रुपए है। पहले इसका ज्यादातर हिस्सा दवाइयों में ही लग जाता था। जनऔषधि की दवाएं लेने के बाद हर महीने 8-9 हजार रुपए की बचत हो रही है। मेरी आप से गुज़ारिश ये है कि जम्मू कश्मीर जैसे पहाड़ी इलाकों में इसे और बढ़ावा दिया जाए।**

उत्तर- 5

गुलाम नबी साहब, आपके एक हमनाम तो यहां दिल्ली में मेरे बहुत करीबी मित्र भी हैं। जम्मू-कश्मीर से ही और देश के स्वास्थ्य मंत्री भी रह चुके हैं। मैं उनसे मिलूंगा तो आपके बारे में जरूर बताऊंगा। गुलाम नबी जी, आपकी जो दिक्कतें हैं, इनमें लगातार दवाओं की ज़रूरत रहती ही है। हमें संतोष है कि जम्मू कश्मीर में जनऔषधि योजना के तहत आप जैसे साथियों को बहुत लाभ हो रहा है।

आपने सही कहा जम्मू कश्मीर हो, नॉर्थ ईस्ट हो, या दूसरे पहाड़ी और आदिवासी क्षेत्र, यहां पर जनऔषधि योजना को विस्तार भी देना है और सारी दवाएं उपलब्ध रहें, ये सुनिश्चित करना भी ज़रूरी है। सरकार का भी निरंतर यही प्रयास है। अब जम्मू कश्मीर और लद्दाख में जो नई व्यवस्थाएं बनी हैं, उनसे इस प्रकार की सुविधाओं में और तेज़ी आएगी। पहले केंद्र की योजनाओं को वहां लागू कर पाना बहुत मुश्किल होता था, लेकिन अब ये अड़चनें हट गई हैं। बीते डेढ़ साल में जम्मू कश्मीर में अभूतपूर्व तेज़ी से विकास का काम चल रहा है। इस दौरान साढ़े 3 लाख से ज्यादा साथियों को आयुष्मान योजना से जोड़ा गया है, 3 लाख बुजुर्गों, महिलाओं और दिव्यांगजनों को सरकार की पेंशन योजना से जोड़ा गया है।

यही नहीं पीएम आवास योजना के तहत 24 हजार से ज्यादा घरों का निर्माण किया गया है, ढाई लाख शौचालय बनाए गए हैं और सवा 3 लाख से ज्यादा घरों को मुफ्त बिजली कनेक्शन दिया गया है। जहां तक स्वास्थ्य सुविधाओं की बात है, तो वहां 2 AIIMS और दूसरे मेडिकल कॉलेज पर भी काम तेज़ी से चल रहा है। जम्मू कश्मीर के विकास में आ रही ये तेज़ी अब और बढ़ने रही है। अब सही मायने में सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास की भावना वहां जमीन पर उतर रही है।

**प्रश्न- 6 प्रधानमंत्री सर, मेरा नाम गीता है। मैं कोयम्बटूर, तमिलनाडु से बोल रही हूँ। मैं 62 साल की हूँ। मैं diabetes और hypertension का इलाज करवा रही हूँ। जब से जनऔषधि केंद्र से दवाएं ले रही हूँ, तब से हर साल 30 हजार रुपए तक की बचत हो रही है। गरीब और मिडिल क्लास के लिए ये बहुत बड़ी राहत है। इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं अपने आसपास अपने जानकारों को भी जनऔषधि की दवाएं लेने के लिए कहती हूँ और उनको बताती हूँ।**

**आप क्योंकि योग और आयुर्वेद को लेकर भी बात करते रहते हैं, तो मैं ये जानना चाहती हूँ कि डायबिटीज जैसी बीमारियों पर इसका कितना असर होता है?**

उत्तर-6 - धन्यवाद गीताजी।

आपको जो बचत हो रही है, उसका लाभ दूसरों को भी मिले, आप ये सुनिश्चित कर रही हैं। आप जैसे जागरूक नागरिक ही इस देश को और मजबूत बना रहे हैं। आप खुद का नहीं बल्कि दूसरे लोगों का भी हित सोच रही हैं, यही एक नागरिक के रूप में हमारा बहुत बड़ा दायित्व है। हर ज़रूरतमन्द को अच्छा और सस्ता इलाज मिले ये सरकार की ज़िम्मेदारी होती है। लेकिन इलाज के चक्कर में ही न पड़ना पड़े, प्रयास यही होना चाहिए। निरोग होने से अच्छा है निरोग रहना। सरकार स्वच्छ भारत, योग दिवस, फिट इंडिया जैसे अभियान इसीलिए तो चला रही है।

देखिये, डायबिटीज और हाइपरटेंशन जैसी अनेक बीमारियां आज देश में तेज़ी से बढ़ रही हैं। ये सभी लाइफस्टाइल से जुड़ी बीमारियां हैं। इनका पूरी तरह से इलाज उतना संभव नहीं है, इनको कंट्रोल करना पड़ता है। जब इनका कारण ही हमारा लाइफस्टाइल है तो जाहिर है कंट्रोल भी हमारे लाइफस्टाइल में ही है। यही कारण है कि अपने लाइफस्टाइल में हमें फिटनेस और हाइजीन से जुड़ी आदतों को अपनाना ज़रूरी है।

योग यही काम करता है। योग हमारे अंगों के साथ-साथ हमारी सांस का भी व्यायाम है। ये एक प्रकार से हमें अनुशासित रूप से जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है। बहनों के लिए तो ये ज्यादा ज़रूरी है। क्योंकि अक्सर बहनें परिवार में सबका ख्याल रखते-रखते, अपना ख्याल रखना नजरअंदाज कर देती हैं। ये ठीक बात नहीं है। परिवार के दूसरे सदस्यों का भी ये दायित्व है वो घर का पूरा काम संभाल रही बहनों को, माताओं को, फिटनेस के लिए प्रेरित करते रहें।

**प्रश्न 7- सर, मेरा नाम पंकज कुमार झा है। मैं बिहार के मुज़फ्फरपुर से हूँ।**

**7 साल पहले नक्सलियों ने मेरे गांव में एक बम प्लांट किया था। जिसके फटने से मुझे मेरा हाथ खोना पड़ा। मैंने हाथ ज़रूर खोया लेकिन हाँसला नहीं छोड़ा। एक दिन न्यूजपेपर में मुझे जनऔषधि योजना का पता चला और मैंने इससे जुड़ने का फैसला किया। मैं 3 साल से ये काम कर रहा हूँ। आज लोगों की सेवा भी हो रही है और 4-5 लाख रुपए की सेल हर महीने हो जाती है।**

**मेरा सवाल ये है सर कि दिव्यांगों को अधिक से अधिक इस योजना से जोड़ने के लिए हम क्या कर सकते हैं?**

उत्तर : देखिए पंकज, सबसे पहले तो आपको बहुत-बहुत साधुवाद। आपका हौसला प्रशंसनीय है। आप सही मायने में जनऔषधि की भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं।

ये योजना सस्ती दवाओं के साथ-साथ आज दिव्यांग जनों सहित अनेक युवा साथियों के लिए आत्मविश्वास का बहुत बड़ा साधन भी बन रही है। जनऔषधि केंद्रों के साथ-साथ डिस्ट्रिब्यूशन, क्वालिटी टेस्टिंग लैब, जैसे अनेक दूसरे साधनों का भी विस्तार हो रहा है। जिसमें हजारों युवा साथियों को रोजगार मिल रहे हैं।

जहां तक दिव्यांग जनों का सवाल है, तो मेरा हमेशा से ये मानना रहा है कि उनके सामर्थ्य का और बेहतर इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

21वीं सदी में भारत की अर्थव्यवस्था में दिव्यांग जनों के कौशल को, उनकी प्रोडक्टिविटी को राष्ट्र के विकास में अधिक से अधिक हिस्सेदारी देना जरूरी है। यही कारण है कि बीते 5 वर्षों से दिव्यांग जनों की सुविधा और उनके कौशल विकास को लेकर व्यापक ध्यान दिया जा रहा है। दिव्यांगों को शिक्षा, रोजगार और दूसरे अधिकार देने के लिए जरूरी कानूनी बदलाव भी किए गए हैं। निश्चित रूप से जनऔषधि जैसी हमारी योजनाओं में भी दिव्यांगों की अधिक से अधिक भागीदारी हम सभी को सुनिश्चित करनी है।

हमारे मंत्री जी, सांसद वहां बैठे हैं ए प्रकार से आपने जन औषधि केंद्र का एक उत्सव सा खड़ा कर दिया है तो मैं सचमुच में आज जहां-जहां देश के कोने में मुझे बात करने का मौका मिला है आप लोगों ने समय निकाला लेकिन एक बात है जनऔषधि केंद्र सच्चे अर्थ में जनशक्ति बन रहे हैं। सरकार देश में स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है। जनऔषधि योजना को भी और अधिक प्रभावी बनाने के लिए निरंतर काम चल रहा है। इसके साथ-साथ जरूरी ये है कि देश का हर नागरिक स्वास्थ्य के प्रति अपने दायित्व को भी समझे। हमें अपने जीवन में, अपनी दिनचर्या में स्वच्छता, योग, संतुलित आहार, खेल और दूसरे व्यायाम को जरूर जगह देनी चाहिए। मैं माता-पिता से भी आग्रह करूंगा कि बच्चों को पढ़ने के लिए आप जितना आग्रह करते हैं खेलने के लिए भी उतना ही आग्रह कीजिए। बच्चे का दिन में अगर 4 बार पसीना नहीं आता है, उतना मेहनत नहीं करता है तो मां बाप ने चिंता करनी चाहिए। फिटनेस को लेकर हमारे प्रयास ही स्वस्थ भारत के संकल्प को सिद्ध करेंगे।

मैं एक बार फिर जनऔषधि केंद्र के इस अभियान में जुड़ने के लिए जो जन औषधि केंद्र चला रहे हैं उनको भी अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं देश के कोटि-कोटि जन अभी भी इस व्यवस्था से अपरिचित हैं मैं आपको भी कहूंगा मैं मीडिया के साथियों को भी कहूंगा कि मानवता का काम है, सेवा का काम है आप अपनी तरफ से भी इसका भरसक प्रचार कीजिए, प्रसार कीजिए और गरीब से गरीब लोग इन सुविधाओं का लाभ लें आप किसी न किसी की जिंदगी में मददगार होंगे अब इस काम को मिलकर करें आप सबको फिर से एक बार बेहतर स्वास्थ्य की मंगलकामनाएं करता हूं। आप सबको होली के पावन-पवित्र त्यौहार की भी बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं और जैसा मैंने प्रारंभ में कहा था ये कोरोनावायरस के नाम पर डरने की जरूरत नहीं है जागरूक होने की जरूरत, अपवाह फैलाने की जरूरत नहीं है उसमें जो Do's and Dont हैं उसका पालन करने की जरूरत है अगर इतना हम कर लेंगे तो हम विजयी होकर आगे बढ़ेंगे मेरी फिर से एक बार आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

बहुत-बहुत धन्यवाद !



\*\*\*\*\*

एएम/एसके-6194

(रिलीज़ आईडी: 1605772) आगंतुक पटल : 249

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Assamese , English , Marathi , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia

प्रधानमंत्री कार्यालय

# राजीव गांधी स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के 25वें स्थापना दिवस पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 01 JUN 2020 12:19PM by PIB Delhi

मुझे इस प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय के 25वें स्थापना दिवस पर आयोजित समारोह का उद्घाटन करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। मैं इस विश्वविद्यालय से जुड़े समस्त चिकित्सा और वैज्ञानिक समुदाय को बधाई देता हूं।

**इन विगत वर्षों में आप सभी शिक्षण के साथ-साथ चिकित्सा प्रणालियों पर प्रशिक्षण के क्षेत्र में भी अद्भुत काम करते रहे हैं।**

25 साल का मतलब है कि यह विश्वविद्यालय अपने फलने-फूलने के चरम चरण में है। यह दौर निश्चित तौर पर और भी बड़ा सोचने एवं बेहतर करने का है। मुझे विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय आने वाले समय में भी निरंतर उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों को छूता रहेगा। मैं कोविड-19 स्थिति से निपटने के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा किए गए प्रयासों की भी सराहना करता हूं। मित्रों, यदि सामान्य स्थिति होती तो यह समारोह निश्चित रूप से और भी अधिक व्यापक होता। यदि वैश्विक महामारी का प्रकोप नहीं बढ़ा होता, तो मैं इस विशेष अवसर पर बेंगलुरु में ही आप सभी के साथ रहकर आमने-सामने चर्चाएं करना पसंद करता।

लेकिन, आज पूरी दुनिया दो विश्व युद्धों के बाद के एक सबसे बड़े संकट से जूझ रही है। जिस तरह से विश्व युद्धों से पहले एवं बाद की दुनिया बदल गई थी, ठीक उसी तरह से कोविड से पहले और बाद की दुनिया भी एक-दूसरे से भिन्न होगी।

मित्रों, संकट की इस घड़ी में दुनिया बड़ी उम्मीदों एवं कृतज्ञता के साथ हमारे डॉक्टरों, नर्सों, चिकित्सा कर्मियों और वैज्ञानिक समुदाय की ओर देख रही है। दुनिया को आपकी 'देखभाल' और 'इलाज' दोनों की ही जरूरत है।

मित्रों, कोविड-19 के खिलाफ भारत की इस दिलेर लड़ाई के मूल में चिकित्सा समुदाय और हमारे कोरोना योद्धाओं की कड़ी मेहनत है। वास्तव में, डॉक्टर और चिकित्सा कर्मी सैनिकों की ही तरह हैं, लेकिन सैनिकों की वर्दी के बिना निरंतर कार्यरत हैं। वायरस एक अदृश्य दुश्मन हो सकता है, लेकिन हमारे कोरोना योद्धा यानी चिकित्सा कर्मी अजेय हैं। अदृश्य बनाम अजेय की लड़ाई में हमारे चिकित्सा कर्मियों की जीत सुनिश्चित है। मित्रों, इससे पहले वैश्वीकरण पर बहस के दौरान आर्थिक मुद्दों पर फोकस किया जाता रहा है। अब, दुनिया को निश्चित तौर पर एकजुट होकर विकास के मानवता केंद्रित पहलुओं पर फोकस करना चाहिए।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में विभिन्न राष्ट्रों की प्रगति पहले से कहीं अधिक मायने रखेगी। मित्रों, पिछले छह वर्षों के दौरान भारत में हमने स्वास्थ्य सेवा और चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में कई उल्लेखनीय पहल की हैं।

**हम मोटे तौर पर चार स्तंभों पर काम कर रहे हैं:**



पहला स्तंभ है - रोग निवारक स्वास्थ्य सेवा। इसमें योग, आयुर्वेद और सामान्य फिटनेस का विशेष महत्व शामिल है। 40 हजार से भी अधिक वेलनेस सेंटर खोले गए हैं जहां मुख्यतः जीवनशैली से संबंधित बीमारियों को नियंत्रित करने पर काफी फोकस किया जाता है। स्वच्छ भारत मिशन की सफलता रोग निवारक स्वास्थ्य सेवा का एक और अहम हिस्सा है।

दूसरा स्तंभ है - किफायती स्वास्थ्य सेवा। आयुष्मान भारत- दुनिया की यह सबसे बड़ी स्वास्थ्य सेवा योजना भारत की ही है। दो साल से भी कम समय में एक करोड़ लोग इस योजना से लाभान्वित हुए हैं। महिलाएं और गांवों में रहने वाले लोग इस योजना के प्रमुख लाभार्थियों में शामिल हैं।

तीसरा स्तंभ है - आपूर्ति के मोर्चे पर सुधार। भारत जैसे देश में समुचित चिकित्सा ढांचा और चिकित्सा शिक्षा की बुनियादी ढांचागत सुविधाएं होनी चाहिए। देश के हर जिले में एक मेडिकल कॉलेज या स्नातकोत्तर चिकित्सा संस्थान सुनिश्चित करने पर काम चल रहा है।

देश में 22 और एम्स खोलने की दिशा में तेजी से प्रगति देखी गई है। पिछले पांच वर्षों में हम एमबीबीएस में तीस हजार से भी अधिक सीटें और स्नातकोत्तर में पंद्रह हजार सीटें जोड़ने में सक्षम साबित हुए हैं। यह आजादी के बाद से लेकर अब तक किसी भी सरकार के पांच साल के कार्यकाल में सबसे बड़ी वृद्धि है। संसद के एक अधिनियम के माध्यम से 'भारतीय चिकित्सा परिषद' का स्थान एक नए 'राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग' ने लिया है। यह चिकित्सा शिक्षा की गुणवत्ता बेहतर करने में काफी मददगार साबित होगा जिससे यह अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हो जाएगा।

चौथा स्तंभ है - मिशन मोड में कार्यान्वयन - कागज पर अच्छी तरह से परिकल्पित आइडिया केवल एक अच्छा आइडिया होता है और जब एक अच्छा आइडिया अच्छी तरह से लागू किया जाता है तो यह एक महान आइडिया बन जाता है। अतः कार्यान्वयन अत्यंत आवश्यक है।

यहां मैं भारत के 'राष्ट्रीय पोषण मिशन' की सफलता पर प्रकाश डालना चाहता हूं जो बच्चों और उनकी माताओं के लिए काफी मददगार साबित हो रहा है। भारत वर्ष 2025 तक टीबी का उन्मूलन करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहा है। यह वर्ष 2030 के वैश्विक लक्ष्य से पांच साल पहले ही होने जा रहा है। 'मिशन इन्द्रधनुष' ने टीकाकरण कवरेज में वार्षिक वृद्धि की हमारी दर को चार गुना बढ़ा दिया है। मित्रों, केंद्र सरकार ने हाल ही में 50 से भी अधिक विभिन्न संबद्ध और स्वास्थ्य सेवा प्रोफेशनलों की शिक्षा के विस्तार के लिए एक नया कानून लाने की मंजूरी दी है। यह कानून जब पारित हो जाएगा तो देश में पैरा-मेडिकल कर्मियों की कमी को दूर करेगा। यह अन्य देशों को कुशल संसाधनों की आपूर्ति करने में भी भारत की मदद करेगा।

मित्रों, तीन आइडिया ऐसे हैं जिन पर मैं अधिकतम चर्चा और भागीदारी का आग्रह करना चाहता हूं।

पहला है - टेली-मेडिसिन में प्रगति। क्या हम ऐसे नए मॉडलों के बारे में सोच सकते हैं जो टेली-मेडिसिन को बड़े पैमाने पर लोकप्रिय बनाने में सक्षम हैं।

दूसरा स्वास्थ्य क्षेत्र में 'मेक इन इंडिया' से संबंधित है। इससे जुड़े शुरुआती फायदे मुझे आशावान बनाते हैं। हमारे घरेलू निर्माताओं ने पीपीई का उत्पादन शुरू कर दिया है और उन्होंने कोविड योद्धाओं को लगभग 1 करोड़ पीपीई की आपूर्ति की है। इसी तरह, हमने सभी राज्यों को 1.2 करोड़ 'मेक इन इंडिया' एन-95 मास्क की आपूर्ति की है।

तीसरा है- अधिक स्वस्थ समाज के लिए आईटी से संबंधित टूल या साधन। मुझे विश्वास है कि आप सभी के मोबाइल फोन पर आरोग्य सेतु एप है। स्वास्थ्य के प्रति जागरूक 12 करोड़ लोगों ने इसे डाउनलोड किया है। यह कोरोना वायरस के खिलाफ लड़ाई में अत्यंत मददगार रहा है।

मित्रों, मुझे एक ऐसी बात की जानकारी है जो आप सभी के लिए काफी चिंता का विषय है। भीड़ की मानसिकता के कारण जो लोग अग्रिम पंक्ति पर काम कर रहे हैं, जो लोग इयूटी पर हैं, चाहे वे डॉक्टर हों या नर्स, सफाई कर्मचारी एवं अन्य कर्मी हों, उन्हें हिंसा का सामना करना पड़ता है। मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ - हिंसा, दुर्व्यवहार और अशिष्ट व्यवहार स्वीकार्य नहीं है। किसी भी प्रकार की हिंसा के खिलाफ आपकी सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए गए हैं। हमने अग्रिम पंक्ति वाले कर्मियों के लिए 50 लाख रुपये का बीमा कवर भी प्रदान किया है।

मित्रों, मैं पिछले 25 वर्षों में इस विश्वविद्यालय की उपयोगी यात्रा के बारे में जानकर अत्यंत प्रसन्न हूँ जिसने हजारों चिकित्सा और अर्ध-चिकित्सा कर्मियों को तैयार किया है जो इस चुनौतीपूर्ण समय में गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय आगे भी उत्कृष्ट गुणवत्ता और कुशलता वाले स्वास्थ्य कर्मियों को तैयार करना जारी रखेगा, जो इस राज्य और देश दोनों को ही गौरवान्वित करेंगे।

धन्यवाद। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

**एसजी/एएम/आरआरएस- 6635**

(रिलीज़ आईडी: 1628331) आगंतुक पटल : 436

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Manipuri , Bengali , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर प्रधानमंत्री का संबोधन

प्रविष्टि तिथि: 21 JUN 2020 7:48AM by PIB Delhi

नमस्कार !!

छठे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की आप सभी को बहुत-बहुत बधाई और शुभकामनाएं। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का ये दिन एकजुटता का दिन है। ये विश्व बंधुत्व के संदेश का दिन है। ये oneness of humanness का दिन है। जो हमें जोड़े, साथ लाये वही तो योग है। जो दूरियों को खत्म करे, वही तो योग है।

कोरोना के इस संकट के दौरान दुनिया भर के लोगों का My Life - My Yoga वीडियो ब्लॉगिंग कंपटीशन में हिस्सा लेना, दिखाता है कि योग के प्रति उत्साह कितना बढ़ रहा है, कितना व्यापक है।

साथियों, इस साल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की theme **Yoga at home and Yoga with family** रखी गई है। आज हम सब सामूहिक कार्यक्रमों से दूर रहकर, घर में ही अपने परिवार के साथ मिलकर योग कर रहे हैं। बच्चे हो, बड़े हो, युवा हो, परिवार के बुजुर्ग हो, सभी जब एक साथ योग के माध्यम से जुड़ते हैं, तो पूरे घर में एक ऊर्जा का संचार होता है। इसलिए, इस बार का योग दिवस, अगर मैं दूसरे शब्दों में कहूँ भावनात्मक योग का भी दिन है, हमारी Family Bonding को भी बढ़ाने का दिन है।

साथियों,

कोरोना pandemic के कारण आज दुनिया योग की जरूरत को पहले से भी अधिक गंभीरता से महसूस कर रही है। अगर हमारी immunity strong हो तो हमें इस बीमारी को हराने में बहुत मदद मिलती है। Immunity को बढ़ाने के लिए योग की अनेक विधियां हैं, अनेक प्रकार के आसन हैं। वो आसन ऐसे हैं जो हमारे शरीर की strength को बढ़ाते हैं, हमारे metabolism को शक्तिशाली करते हैं।

लेकिन Covid19 वायरस खासतौर पर हमारे श्वसन तंत्र, यानि कि respiratory system पर attack करता है। हमारे Respiratory system को strong करने में जिससे सबसे ज्यादा मदद मिलती है वो है प्राणायाम, यानि कि breathing exercise. सामान्य तौर पर अनुलोम विलोम प्राणायाम ही ज्यादा popular है। ये काफी प्रभावी भी है। लेकिन प्राणायाम के अनेक प्रकार हैं। इसमें, शीतली, कपालभाति, भ्रामरी, भस्त्रिका, ये सब भी होते हैं, बहुत हैं अनगिनत हैं।

योग की ये सभी विधाएं, ये तकनीक, हमारे respiratory system और immune system दोनों को मजबूत करने में बहुत मदद करती हैं। इसलिए आपसे मेरा विशेष आग्रह है आप प्राणायाम को अपने daily अभ्यास में जरूर शामिल करिए, और अनुलोम-विलोम के साथ ही अनेक जो प्राणायाम techniques को भी सीखिए, उसको सिद्ध कीजिये। योग की इन पद्धतियों का लाभ बड़ी संख्या में आज पूरी दुनिया में Covid19 patients ले भी रहे हैं। योग की ताकत से उन्हें इस बीमारी को हराने में मदद मिल रही है।

साथियों,

योग से हमें वो आत्मविश्वास और मनोबल भी मिलता है जिससे हम संकटों से जूझ सकें, जीत सकें। योग से हमें मानसिक शांति मिलती है, संयम और सहनशक्ति भी मिलती है। स्वामी विवेकानंद कहते थे- “एक आदर्श व्यक्ति वो है जो नितांत निर्जन में भी क्रियाशील रहता है, और अत्यधिक गतिशीलता में भी सम्पूर्ण शांति का अनुभव करता है”।

किसी भी व्यक्ति के लिए ये एक बहुत बड़ी क्षमता होती है। जब बहुत ज्यादा विपरीत परिस्थिति हो, तब भी Active रहना, थककर हार न मानना, Balanced रहना, ये सारी चीज़ें योग के माध्यम से हमारे जीवन में स्थान प्राप्त करती है, हमारे जीवन को ताकत देती है। इसीलिए, आपने भी देखा होगा, महसूस किया होगा, योग का साधक कभी संकट में धैर्य नहीं खोता है।

योग का अर्थ ही है- ‘समत्वम् योग उच्यते’ अर्थात्, अनुकूलता-प्रतिकूलता, सफलता-विफलता, सुख-संकट, हर परिस्थिति में समान रहने, अडिग रहने का नाम ही योग है।

Friends,

Yoga enhances our quest for a healthier planet. It has emerged as a force for unity and deepens the bonds of humanity. It does not discriminate. It goes beyond race, colour, gender, faith and nations.

Anybody can embrace Yoga. All you need is some part of your time and empty space. Yoga is giving us not only the physical strength, but also mental balance and emotional stability to confidently negotiate the challenges before us.

Friends,

If we can fine tune our chords of health and hope, the day is not far away when world will witness the success of healthy and happy humanity. Yoga can definitely help us make this happen

साथियों,

जब हम योग के माध्यम से समस्याओं के समाधान की बात कर रहे हैं, दुनिया के कल्याण की बात कर रहे हैं, तो मैं योगेश्वर कृष्ण के कर्मयोग का भी आपको पुनः स्मरण कराना चाहता हूँ। गीता में भगवान कृष्ण ने योग की व्याख्या करते हुए कहा है- ‘योगः कर्मसु कौशलम्’ अर्थात्, कर्म की कुशलता ही योग है। Efficiency in Action is Yoga. यह मंत्रा सदा हमें सिखाता है कि योग के द्वारा जीवन में अधिक योग्य बनने की क्षमता पैदा होती है। अगर हम अपना काम अनुशासन से करते हैं, अपना दायित्व निभाते हैं तो भी ये एक तरह का योग ही है।

साथियों,

कर्मयोग का एक विस्तार और है। हमारे यहाँ कहा गया है-

युक्त आहार विहारस्य, युक्त चेष्टस्य कर्मसु।

युक्त स्वप्ना-व-बोधस्य, योगो भवति दुःखहा।।

अर्थात्, सही खान-पान, सही ढंग से खेल-कूद, सोने-जागने की सही आदतें, और अपने काम, अपनी duties को सही ढंग से करना ही योग है। इसी कर्मयोग से हमें सभी तकलीफों और समस्याओं का समाधान मिलता है। इतना ही नहीं, हमारे यहाँ निष्काम कर्म को, बिना किसी स्वार्थ के सभी का उपकार करने की भावना को भी कर्मयोग कहा गया है। कर्मयोग की ये भावना, भारत की रग-रग में रची-बसी है। जब भी जरूरत पड़ी, भारत के इस निःस्वार्थ भाव को पूरी दुनिया ने अनुभव किया है।

साथियों,

जब हम योग से चलते हैं, कर्मयोग की भावना से चलते हैं, तो व्यक्ति के तौर पर, समाज के तौर पर, देश के तौर पर हमारी शक्ति भी कई गुना बढ़ जाती है। आज हमें इसी भावना से संकल्प लेना है- हम अपने स्वास्थ्य के लिए, अपनों के स्वास्थ्य के लिए हर संभव प्रयास करेंगे। एक सजग नागरिक के रूप में हम परिवार और समाज के रूप में एकजुट होकर आगे बढ़ेंगे।

हम प्रयास करेंगे कि Yoga at home and Yoga with family को अपने जीवन का हिस्सा बनाएँ। अगर हम यह करेंगे तो हम ज़रूर सफल होंगे, हम ज़रूर विजयी होंगे। इसी विश्वास के साथ, आप सभी को फिर से योग दिवस की शुभकामनाएं।

**लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥**

ओम !!

\*\*\*\*\*

VRRK/KP

(रिलीज़ आईडी: 1633042) आगंतुक पटल : 740

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Manipuri , Assamese , Bengali , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

# फिट इंडिया मूवमेंट की पहली वर्षगांठ पर प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 24 SEP 2020 3:23PM by PIB Delhi

आज देश को प्रेरणा देनेवाले ऐसे सात महानुभावों का भी मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूँ क्योंकि आपने समय निकाला और आपके खुद के अनुभवों को बताया आपने फिटनेस के भिन्न-भिन्न आयामों पर खुद के जो अपने अनुभव शेयर किए वो निश्चित रूप से देश की हर पीढ़ी को बहुत ही लाभकारी होंगे, ऐसा मुझे लगता है। आज का यह discussion हर आयु वर्ग के लिए और भिन्न-भिन्न रुचि रखने वालों के लिए भी बहुत ही उपयोगी होगा। फिट इंडिया मूवमेंट की first anniversary पर मैं सभी देशवासियों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हूँ।

एक साल के भीतर-भीतर ये फिटनेस मूवमेंट, movement of people भी बन चुका है, और movement of positivity भी बन चुका है। देश में health और fitness को लेकर निरंतर awareness भी बढ़ रही है, और activeness भी बढ़ी है। मुझे खुशी है कि योग, आसन, व्यायाम, वॉकिंग, रनिंग, स्वीमिंग healthy food habits, healthy life style, अब ये हमारी natural consciousness का हिस्सा बन रहा है।

साथियों,

Fit India मूवमेंट ने अपना एक साल एक ऐसे समय में पूरा किया है जिसमें से करीब-करीब 6 महीने अनेक प्रकार के restrictions के बीच हमें गुजारा करना पड़ा है। लेकिन फिट इंडिया मूवमेंट ने अपने प्रभाव और प्रासंगिकता को इस कोरोनाकाल में सिद्ध करके दिखाया है। वाकई, फिट रहना उतना मुश्किल काम नहीं है जितना कुछ लोगों को लगता है। थोड़े से नियम से, और थोड़े से परिश्रम से आप हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं। **'फिटनेस की डोज़, आधा घंटा रोज'** इस मंत्र में सभी का स्वास्थ्य, सभी का सुख छिपा हुआ है। फिर चाहे योग हो, या बैडमिंटन हो, टेनिस हो, या फुटबाल हो, कराटे हो या कबड्डी, जो भी आपको पसंद आए, कम से कम 30 मिनट रोज़ कीजिये। अभी हमने देखा, युवा मंत्रालय और स्वास्थ्य मंत्रालय ने मिलकर फिटनेस प्रोटोकॉल भी जारी किया है।

साथियों,

आज दुनियाभर में fitness को लेकर जागरूकता है। World Health Organisation-WHO ने Global strategy on Diet, physical activity and health बनाई है। Physical activity पर global recommendation भी जारी किए हैं। आज दुनिया के अनेक देशों ने फिटनेस को लेकर नए लक्ष्य बनाए हैं और उन पर अनेक मोर्चों पर वो काम कर रहे हैं, अनेक प्रकार के काम कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया, जर्मनी, ब्रिटेन, अमेरिका, ऐसे अनेक देशों में इस समय बड़े पैमाने पर फिटनेस का अभियान चल रहा है कि उनके ज्यादा से ज्यादा नागरिक daily physical exercise करें, physical exercise के रूटीन से जुड़ें।

साथियों, हमारे आयुर्विज्ञान शास्त्रों में कहा गया है-

**सर्व प्राणि भूताम् नित्यम्**

**आयुः युक्तिम् अपेक्षते।**

**दैवे पुरुषा कारे च**

**स्थितम् हि अस्य बला बलम्॥**



अर्थात्, संसार में श्रम, सफलता, भाग्य, सब कुछ आरोग्य पर, health पर ही निर्भर करता है। स्वास्थ्य है, तभी भाग्य है, तभी सफलता है। जब हम नियमित रूप से व्यायाम करते हैं, खुद को फिट और मजबूत रखते हैं। एक भावना जागती है कि हाँ हम स्वयं के निर्माता हैं। एक आत्मविश्वास आता है। व्यक्ति का यही आत्मविश्वास उसको जीवन के अलग अलग क्षेत्रों में भी सफलता दिलाता है। यही बात परिवार, समाज और देश पर भी लागू है, एक परिवार जो एक साथ खेलता है, एक साथ फिट भी रहता है।

### **A family that plays together, stays together.**

इस महामारी के दौरान कई परिवारों ने यह experiment करके देखा है। साथ में खेले, साथ में योग –प्राणायाम किया, exercises की, मिलकर पसीना बहाया। अनुभव यह आया की यह Physical fitness के लिए तो उपयोगी बना ही लेकिन उसका एक और बाई प्रोडक्ट के रूप में Emotional Bonding, better understanding, Mutual Cooperation जैसी अनेक बातें भी परिवार की एक ताकत बन गई। सहजता से उभर करके आई। आम तौर पर ये भी देखने में आता है कि कोई भी अच्छी आदत होती है, उसे हमारे माता-पिता ही हमें सिखाते हैं। लेकिन फिटनेस के मामले में अब थोड़ा उल्टा हो रहा है। अब युवा ही initiative ले रहे हैं, और माता-पिता को भी exercise करने, खेलने के लिए motivate करते हैं।

साथियों, हमारे यहां कहा गया है-

### **मन चंगा तो कठौती में गंगा।**

ये संदेश spiritually और socially तो महत्वपूर्ण है ही, लेकिन इसके और भी गहरे निहितार्थ भी हैं जो हमारी daily life के लिए बहुत जरूरी है। इसका एक ये भी मतलब है कि, हमारी mental health भी बहुत Important है। यानि, sound mind is in a sound body. इसका उल्टा भी उतना ही सही है। जब हमारा मन चंगा होता है, स्वस्थ होता है तो ही शरीर भी स्वस्थ रहता है। और अभी चर्चा में आया था की मन को स्वस्थ रखने की एक approach है, मन को विस्तार देना। संकुचित " मैं " से आगे बढ़कर जब व्यक्ति परिवार, समाज और देश को अपना ही विस्तार मानता है उनके लिए काम करता है तो उसमें एक आत्मविश्वास आता है, mentally strong बनने के लिए ये एक बड़ी जड़ी-बूटी का काम करता है। बनता है। और इसीलिये स्वामी विवेकानंद ने कहा था -"Strength is Life, Weakness is Death. Expansion is Life, Contraction is Death."

आजकल लोगों से, समाज से, देश से जुड़ने और जुड़े रहने के लिए तरीकों की, माध्यमों की कमी तो बिल्कुल नहीं है, भरपूर अवसर है। और प्रेरणा के लिये हमारे आस पास ही कई उदाहरण मिल जाएंगे। आज जिन सात महानुभावों को सुना, इससे बड़ी प्रेरणा क्या होती है, हमें बस इतना करना है कि अपनी रुचि अपने passion के अनुसार कुछ चीजों को चुनना है और उसे नियमितता से करना है। मैं देशवासियों से आग्रह करूंगा, हर पीढ़ी के महानुभावों से आग्रह करूंगा कि तय कीजिए कि आप दूसरों की कैसे मदद करेंगे, क्या देंगे - अपना समय, अपनी knowledge, अपनी Skills, Physical help कुछ भी लेकिन कीजिए ज़रूर कीजिए ।

साथियों, मुझे भरोसा है देशवासी फिट इंडिया मूवमेंट से और ज्यादा से ज्यादा जुड़ते रहेंगे और हम सब भी मिलकर लोगों को जोड़ते रहेंगे। 'फिट इंडिया मूवमेंट' दरअसल 'हित इंडिया मूवमेंट' भी है। इसलिए, जितना इंडिया फिट होगा, उतना ही इंडिया हित होगा। इसमें आप सभी के प्रयास हमेशा की तरह देश की बहुत मदद करेंगे।

मैं आप सबको शुभकामनाओं के साथ, और आप सबका हृदय से आभार व्यक्त करते हुए आज फिट इंडिया मूवमेंट को एक नया बल दें, नए संकल्प के साथ आगे बढ़ें, फिट इंडिया व्यक्ति-समस्ति का एक पूरा सिलसिला चले। इसी एक भावना के साथ आप सबका बहुत बहुत धन्यवाद!

\*\*\*\*\*

वीआरआरके/वीजे/बीएम

(रिलीज़ आईडी: 1658659) आगंतुक पटल : 403

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Punjabi , Marathi , English , Urdu , Manipuri , Assamese , Bengali , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

# जामनगर और जयपुर में भविष्य को ध्यान में रखकर तैयार किए गए दो आयुर्वेद संस्थानों के उद्घाटन अवसर पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 13 NOV 2020 1:00PM by PIB Delhi

नमस्कार!

केंद्रीय मंत्रिमंडल में मेरे सहयोगी श्रीमान श्रीपद नाइक जी, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्रीमान अशोक गहलोत जी, गुजरात के मुख्यमंत्री श्रीमान विजय भाई रूपाणी जी, राजस्थान के गवर्नर श्रीमान कलराज जी, गुजरात के गवर्नर श्रीमान आचार्य देवव्रत जी, अन्य सभी मंत्रीगण संसदगण, विधायकगण, आयुर्वेद से जुड़े सभी विद्वानजन, देवियों और सज्जनों!

आप सभी को धनतेरस, भगवान धनवंतरि की जयंती की बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धनवंतरि जी आरोग्य के देवता माने जाते हैं और आयुर्वेद की रचना भी उनके आशीर्वाद से हुई है। आज के इस पावन दिन, आयुर्वेद दिवस पर, भगवान धनवंतरि से पूरी मानव जाति की प्रार्थना है कि वो भारत समेत पूरी दुनिया को आरोग्य का आशीष दें।

साथियों,

इस बार का आयुर्वेद दिवस गुजरात और राजस्थान के लिए विशेष हैं, हमारे युवा साथियों के लिए भी विशेष है। आज गुजरात के जामनगर में Institute of Teaching and Research in Ayurveda को Institute of National Importance के रूप में मान्यता मिली है। इसी तरह जयपुर के राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान को भी डीम्ड यूनिवर्सिटी के रूप में आज लोकार्पित किया गया है। आयुर्वेद में उच्च शिक्षा, रिसर्च और स्किल डेवलपमेंट से जुड़े इन बेहतरीन संस्थानों के लिए राजस्थान-गुजरात के साथ ही पूरे देश को बहुत-बहुत बधाई।

साथियों,

आयुर्वेद, भारत की एक विरासत है जिसके विस्तार में पूरी मानवता की भलाई है। ये देखकर किस भारतीय को खुशी नहीं होगी कि हमारा पारंपरिक ज्ञान, अब अन्य देशों को भी समृद्ध कर रहा है। आज ब्राजील की राष्ट्रीय नीति में आयुर्वेद शामिल है। भारत-अमेरिका संबंध हों, भारत-जर्मनी रिश्ते हों, आयुष और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से जुड़ा सहयोग निरंतर बढ़ रहा है। ये भी प्रत्येक भारतीय के लिए बहुत गर्व की बात है कि WHO ने और अभी WHO के मुखिया और मेरे मित्र उन्होंने एक बहुत महत्वपूर्ण घोषणा की है, WHO ने Global Centre for Traditional medicine इसकी स्थापना के लिए दुनिया में से भारत को चुना है और अब भारत में से दुनिया के लिए इस दिशा में काम होगा। भारत को ये बड़ी जिम्मेदारी सौंपने के लिए मैं World Health Organization का, विशेष रूप से WHO के महानिदेशक मेरे मित्र डॉक्टर टेड्रोस का भी हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार भारत Pharmacy of the world इस रूप में उभरा है, उसी प्रकार पारंपरिक चिकित्सा का ये Center भी Global Wellness का सेंटर बनेगा। ये सेंटर दुनिया भर की Traditional medicines के विकास और उनसे जुड़ी रिसर्च को नई बुलंदियां देने वाला साबित होगा।

साथियों,

बदलते हुए समय के साथ आज हर चीज Integrate हो रही है। स्वास्थ्य भी इससे अलग नहीं है। इसी सोच के साथ देश आज इलाज की अलग-अलग पद्धतियों के Integration, सभी को महत्व देने की तरफ एक के बाद एक कदम उठा रहा है। इसी सोच ने आयुष को, आयुर्वेद को देश की आरोग्य नीति- Health Policy का प्रमुख हिस्सा बनाया है। आज हम स्वास्थ्य के अपने पारंपरिक खज़ाने को सिर्फ एक विकल्प नहीं, बल्कि देश के आरोग्य का बड़ा आधार बना रहे हैं।

साथियों,

ये हमेशा से एक स्थापित सत्य रहा है कि भारत के पास आरोग्य से जुड़ी कितनी बड़ी विरासत है। लेकिन ये भी उतना ही सही है कि ये ज्ञान ज्यादातर किताबों में, शास्त्रों में रहा है और थोड़ा-बहुत दादी-नानी के नुस्खों में रहा है। इस ज्ञान को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुसार विकसित किया जाना ये बहुत आवश्यक है। इसलिए, देश में अब पहली बार हमारे पुरातन चिकित्सा वाला ज्ञान जो है उस ज्ञान-विज्ञान को 21वीं सदी के आधुनिक विज्ञान से मिली जानकारी के साथ भी उसको जोड़ा जा रहा है, integrate किया जा रहा है, नई रिसर्च की जा रही है। तीन साल पहले ही हमारे यहां अखिल भारतीय आयुर्वेदिक संस्थान की स्थापना की गई थी। लेह में सोवा-रिग्पा से जुड़ी रिसर्च और दूसरे अध्ययन के लिए राष्ट्रीय सोवा रिग्पा संस्थान विकसित करने का काम जारी है। आज गुजरात और राजस्थान के जिन दो संस्थानों को अपग्रेड किया गया है, वो भी इसी सिलसिले का विस्तार है।

भाइयों और बहनों,

कहते हैं जब कद बढ़ता है तो दायित्व भी बढ़ता है। आज जब इन दो महत्वपूर्ण संस्थानों का कद बढ़ा है, तो मेरा एक आग्रह भी है। देश के प्रीमियम आयुर्वेदिक संस्थान होने के कारण अब आप और आप सब पर ऐसे पाठ्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी है जो International Practices के अनुकूल और वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप हों। मैं शिक्षा मंत्रालय और UGC को भी आग्रह से कहूंगा कि आयुर-भौतिकी और आयुर-रसायन शास्त्र जैसे विषयों को लेकर नई संभावनाओं के साथ काम किया जाए। इससे रिसर्च को ज्यादा से ज्यादा बढ़ावा देने के लिए Integrated Doctoral और Post Doctoral Curriculum बनाने के लिए काम किया जा सकता है। आज मेरा देश के प्राइवेट सेक्टर, हमारे स्टार्ट अप्स से भी एक विशेष आग्रह है। देश के प्राइवेट सेक्टर, नए स्टार्ट अप्स को आयुर्वेद की ग्लोबल डिमांड को स्टडी करना चाहिए और इस सेक्टर में होने वाली ग्रोथ में अपनी हिस्सेदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। आयुर्वेद की लोकल शक्ति के लिए आपको दुनिया भर में वोकल होना है। मुझे विश्वास है कि हमारे साझा प्रयासों से आयुष ही नहीं बल्कि आरोग्य का हमारा पूरा सिस्टम एक बड़े बदलाव का साक्षी बनेगा।

साथियों,

आप भली-भांति ये भी जानते हैं कि इसी साल संसद के मॉनसून सत्र में दो ऐतिहासिक आयोग भी बनाए गए हैं। पहला- National Commission for Indian System of Medicine और दूसरा National Commission for Homoeopathy. यही नहीं, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारत की मेडिकल एजुकेशन में Integration की अप्रोच को प्रोत्साहित किया गया है। इस पॉलिसी की भावना है कि एलोपैथिक Education में आयुर्वेद की बेसिक जानकारी ज़रूरी हो और आयुर्वेदिक एजुकेशन में एलोपैथिक Practices की मूल जानकारी ज़रूरी हो। ये कदम आयुष और भारतीय पारंपरिक चिकित्सा पद्धति से जुड़ी शिक्षा और रिसर्च को और मजबूत बनाएंगे।

साथियों,

21वीं सदी का भारत अब टुकड़ों में नहीं, होलिस्टिक तरीके से सोचता है। हेल्थ से जुड़ी चुनौतियों को भी अब होलिस्टिक approach के साथ उसी तरीके से ही सुलझाया जा रहा है। आज देश में सस्ते और प्रभावी इलाज के साथ-साथ Preventive Healthcare पर, Wellness ज्यादा फोकस किया जा रहा है। आचार्य चरक ने भी कहा है- स्वस्थस्य स्वास्थ्य रक्षणं, आतुरस्य विकार प्रशमनं च! यानि स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी को रोगमुक्त करना, ये आयुर्वेद के उद्देश्य हैं। स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ ही रहे, इसी सोच के साथ ऐसे हर कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे बीमार करने वाली स्थितियां दूर हों। एक तरफ साफ-सफाई, स्वच्छता, शौचालय, साफ पानी, धुआंमुक्त रसोई, पोषण इन सभी पर ध्यान दिया जा रहा है तो वहीं डेढ़ लाख Health और Wellness Centers हिन्दुस्तान के कोने-कोने में तैयार किए जा रहे हैं। इनमें विशेष तौर पर साढ़े 12 हजार से ज्यादा आयुष Wellness Centers पूरी तरह आयुर्वेद को समर्पित हैं, आयुर्वेद से जुड़े बन रहे हैं।

साथियों,

Wellness का ये भारतीय दर्शन आज पूरी दुनिया को आकर्षित कर रहा है। कोरोना के इस मुश्किल समय ने फिर दिखाया है कि Health and Wellness से जुड़ी भारत की ये पारंपरिक विद्या कितनी कारगर है। जब कोरोना से मुकाबले के लिए कोई प्रभावी तरीका नहीं था, तो भारत के घर-घर में हल्दी, दूध और काढ़ा जैसे अनेक Immunity Booster उपाय बहुत काम आए। इतनी बड़ी जनसंख्या, इतनी घनी आबादी और ऐसा हमारा देश, अगर आज संभली हुई स्थिति में है, तो उसमें हमारी इस परंपरा की भी अहम भूमिका रही है।

साथियों,

कोरोना काल में पूरी दुनिया में आयुर्वेदिक प्रोडक्ट्स की मांग तेज़ी से बढ़ी है। बीते साल की अपेक्षा इस साल सितंबर में आयुर्वेदिक उत्पादों का निर्यात लगभग डेढ़ गुना, करीब-करीब 45 प्रतिशत बढ़ा है। यही नहीं मसालों के निर्यात में भी काफी बढ़ोतरी दर्ज की गई है। हल्दी, अदरक ऐसी चीजें जो immunity booster मानी जाती हैं, उनका निर्यात अचानक इस तरह बढ़ना ये दिखाता है कि दुनिया में आयुर्वेदिक समाधानों और भारतीय मसालों पर विश्वास कितना बढ़ रहा है। अब तो कई देशों में हल्दी से जुड़े विशेष पेय पदार्थों का भी प्रचलन बढ़ रहा है। आज दुनिया के प्रतिष्ठित मेडिकल जर्नल्स भी आयुर्वेद में नई आशा, नई उम्मीद देख रहे हैं।

साथियों,

कोरोना के इस काल में हमारा फोकस सिर्फ आयुर्वेद के उपयोग तक ही सीमित नहीं रहा। बल्कि इस मुश्किल घड़ी का इस्तेमाल आयुष से जुड़ी रिसर्च को देश और दुनिया में आगे बढ़ाने के लिए किया जा रहा है। आज एक तरफ भारत जहां वैक्सीन की टेस्टिंग कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ कोविड से लड़ने के लिए आयुर्वेदिक रिसर्च पर भी International Collaboration को तेज़ी से बढ़ा रहा है। अभी-अभी, हमारे साथी श्रीपद जी ने बताया कि इस समय सौ से ज्यादा स्थानों पर रिसर्च चल रही है। यहां दिल्ली में ही अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान ने, जैसा अभी आपको विस्तार से बताया गया, दिल्ली पुलिस के 80 हजार जवानों पर Immunity से जुड़ी रिसर्च की है। ये दुनिया की सबसे बड़ी Group Study हो सकती है। इसके भी उत्साहजनक परिणाम देखने को मिले हैं। आने वाले दिनों में कुछ और अंतर्राष्ट्रीय परीक्षण भी शुरू किए जाने हैं।

साथियों,

आज हम आयुर्वेदिक दवाओं, जड़ी-बूटियों के साथ-साथ इम्यूनिटी को बढ़ाने वाले Nutritious Foods पर भी विशेष बल दे रहे हैं। मोटे अनाज यानि मिलेट्स का उत्पादन बढ़ाने के लिए आज किसानों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। यही नहीं गंगा जी के किनारे और हिमालयी क्षेत्रों में ऑर्गेनिक उत्पादों को बढ़ावा दिया जा रहा है। आयुर्वेद से जुड़े हुए पेड़-पौधों लगाने पर बल दिया जा रहा है, कोशिश ये है कि दुनिया की Wellness में भारत ज्यादा से ज्यादा कंट्रीब्यूट करे, हमारा Export भी बढ़े और हमारे किसानों की आय में भी बढ़ोतरी हो। आयुष मंत्रालय, इसके लिए एक व्यापक योजना पर काम कर रहा है। आपने भी देखा होगा कि कोविड महामारी शुरू होने के बाद, आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ जैसे अश्वगंधा, गिलोय, तुलसी आदि की कीमतें इसलिए बढ़ी क्योंकि मांग बढ़ी, लोगों का विश्वास बढ़ा। मुझे बताया गया है कि इस बार अश्वगंधा की कीमत पिछले साल के मुकाबले दोगुनी से भी ज्यादा तक पहुंची है। इसका सीधा लाभ इन पौधों, इन जड़ी-बूटियों की खेती करने वाले हमारे किसान परिवारों तक पहुंचा है। हालांकि अनेक जड़ी-बूटियां हैं, जिनकी उपयोगिता के बारे में अभी भी हमारे यहां जागरूकता और बढ़ाने की जरूरत है। ऐसे लगभग 50 औषधीय पौधे हैं, जिनकी सब्जियों और सलाद के रूप में खूब उपयोगिता है। ऐसे में कृषि मंत्रालय हो, आयुष मंत्रालय हो या फिर दूसरे विभाग हों, सभी के संयुक्त प्रयासों से इस क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन आ सकता है।

साथियों,

आयुर्वेद से जुड़े इस पूरे इकोसिस्टम के विकास में, देश में हेल्थ एंड वेलनेस से जुड़े टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलेगा। गुजरात और राजस्थान में तो इसके लिए असीम संभावनाएं भी हैं। मुझे विश्वास है कि जामनगर और जयपुर के ये दोनों संस्थान इस दिशा में भी लाभकारी सिद्ध होंगे। एक बार फिर से आप सभी को बहुत-बहुत बधाई। आज छोटी दिवाली है, कल बड़ी दिवाली है। आपको, आपके परिवार को भी मेरी तरफ से इस दीपावली के पावन पर्व की अनेक-अनेक शुभकामनाएं हैं।

बहुत-बहुत धन्यवाद!!

PM Modi's address at inauguration of two future-ready Ayurveda institut...



\*\*\*\*\*

डीएस/एमजी/एएम/एसके



(रिलीज़ आईडी: 1672829) आगतुक पटल : 250

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Assamese , Manipuri , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

# जम्मू और कश्मीर के सभी निवासियों के लिए आयुष्मान भारत पीएम-जेएवाई सेहत के शुभारंभ पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मूलपाठ

प्रविष्टि तिथि: 26 DEC 2020 4:21PM by PIB Delhi

आज मुझे जम्मू-कश्मीर के दो लाभार्थियों से आयुष्मान भारत योजना के विषय में उनका अनुभव सुनने का अवसर मिला। मेरे लिए सिर्फ आपके ये अनुभव नहीं हैं। कभी-कभी जब काम करते हैं, निर्णय करते हैं, लेकिन जिनके लिए करते हैं उनसे जब संतोष के शब्द मिलते हैं, वो शब्द मेरे लिए आशीर्वाद बन जाते हैं। मुझे गरीबों के लिए और ज्यादा काम करने के लिए, और मेहनत करने के लिए और दौड़ने के लिए, ये आपके आशीर्वाद बड़ी ताकत देते हैं और इत्तेफाक से देखिए दोनों भाई जम्मू वाले सज्जन भी और श्रीनगर वाले भी, अपना छोटा कारोबार कोई एक झाड़वरी करता है कोई कुछ, लेकिन मुसीबत के समय में ये योजना उनकी जीवन में कितना बड़ा काम कर रही है। आपकी बातें सुनकर मुझे बहुत अच्छा लगा। विकास की योजनाओं का लाभ आखिरी इंसान तक पहुंचे गरीब से गरीब तक पहुंचे, जमीन के हर कोने तक पहुंचे, सभी तक पहुंचे यह हमारी सरकार का commitment है। आज इस समारोह में उपस्थित मेरे मंत्री परिषद के साथी गृह मंत्री श्री अमित शाह जी, स्वास्थ्य मंत्री भाई डॉक्टर हर्षवर्धन जी, पीएमओ में मेरे साथ राज्यमंत्री के रूप में काम कर रहे भाई जितेंद्र सिंह जी, जम्मू-कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर श्रीमान मनोज सिन्हा जी, संसद के मेरे अन्य सभी सहयोगी, जम्मू-कश्मीर के जन प्रतिनिधिगण और मेरे जम्मू-कश्मीर के प्यारे भाइयों और बहनों,

आज का दिन जम्मू कश्मीर के लिए बहुत ऐतिहासिक है। आज जम्मू कश्मीर के सभी लोगों को आयुष्मान योजना का लाभ मिलने जा रहा है। सेहत स्कीम- अपने आप में एक बहुत बड़ा कदम है। और जम्मू-कश्मीर को अपने लोगों के विकास के लिए ये कदम उठाता देख, मुझे भी बहुत खुशी हो रही है और इसलिए श्रीमान मनोज सिन्हा जी और उनकी पूरी टीम को, सरकार के सभी मुलाजिम को, जम्मू-कश्मीर के नागरिकों को मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई है। वैसे मेरी इच्छा थी कि ये कार्यक्रम कल ही हो, अगर 25 तारीख को अटल जी के जन्मदिन पर ये हो पाता लेकिन मेरी अपनी कुछ व्यस्तताओं के कारण मैं कल इसे नहीं कर पाया इसलिए मुझे आज की date तय करनी पड़ी। अटल जी का जम्मू-कश्मीर से एक विशेष स्नेह था। अटल जी इंसानियत, जम्हूरियत और कश्मीरियत की बात को लेकर के हम सबको आगे के कामों के लिए लगातार दिशा-निर्देश देते रहे हैं। इन्हीं तीन मंत्रों को लेकर के आज जम्मू-कश्मीर, इसी भावना को मजबूत करते हुए आगे बढ़ रहा है।

साथियों,

इस योजना के फायदों पर विस्तार से बात करने से पहले मैं आज, मुझे अवसर मिला है आपके बीच आने का तो मैं कहना चाहूंगा मैं जम्मू-कश्मीर के लोगों को लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए अनेक-अनेक-अनेक बधाइयां देता हूँ। District Development Council के चुनाव ने एक नया अध्याय लिखा है। मैं इन चुनावों के हर Phase में देख रहा था कि कैसे इतनी सदी के बावजूद, कोरोना के बावजूद, नौजवान, बुजुर्ग, महिलाएं बूथ पर पहुंचे हैं। घंटों तक कतार में खड़े रहे हैं। जम्मू कश्मीर के हर वोटर

के चेहरे पर मुझे विकास के लिए, डेवलपमेंट के लिए एक उम्मीद नजर आई, उमंग नजर आई। जम्मू कश्मीर के हर वोटर की आंखों में मैंने अतीत को पीछे छोड़ते हुए, बेहतर भविष्य का विश्वास भी देखा है।

साथियों,

इन चुनावों में जम्मू-कश्मीर के लोगों ने लोकतंत्र की जड़ों को और मजबूत करने का काम किया है और मैं ये भी कहना चाहूंगा कि जम्मू-कश्मीर का प्रशासन, सुरक्षा बल जिस प्रकार से उन्होंने इस चुनाव का संचालन किया है और सभी दलों की तरफ से ये चुनाव बहुत ही transparent हुए, नेक नियत से हुए। ये जब मैं सुनता हूं तो इतना मुझे गर्व हो रहा है कि जम्मू-कश्मीर से चुनाव निष्पक्ष होना, स्वतंत्र होना, ये बात जम्मू-कश्मीर की तरफ से सुनता हूं तो लोकतंत्र की ताकत का हमें और विश्वास मजबूत हो जाता है। मैं प्रशासन को भी, सुरक्षा बलों को भी ढेर सारी बधाइयां देता हूं। आपने छोटा काम नहीं किया है, बहुत बड़ा काम किया है। आज अगर मैं रूबरू होता तो सब प्रशासन के लोगों की जितनी तारीफ करता शायद मेरे शब्द कम पड़ जाते। इतना बड़ा काम आपने किया है। आपने देश में एक नया विश्वास पैदा किया है और उसका पूरा credit मनोज जी और उनके सरकार के, प्रशासन के सब लोगों को जाता है। भारत के लिए गौरव का पल है।

साथियों,

जम्मू-कश्मीर में ये त्रि-स्तरीय पंचायत व्यवस्था एक प्रकार से महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज का सपना है, एक प्रकार से ये चुनाव गांधी के ग्राम स्वराज का सपना जीता है और देश में जो पंचायती राज व्यवस्था है, उसने आज जम्मू-कश्मीर की धरती पर पूर्णता को प्राप्त किया है। ये नए दशक में, नए युग के नए नेतृत्व का आरंभ है। बीते वर्षों में हमने जम्मू-कश्मीर में Grassroot Democracy को, जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को मजबूत करने के लिए दिन रात प्रयास किया है और जम्मू-कश्मीर के भाइयों-बहनों को पता होगा एक समय था, हम लोग जम्मू-कश्मीर की सरकार का हिस्सा थे। हमारे उप-मुख्यमंत्री थे, हमारे मंत्री थे लेकिन हमने उस सत्ता सुख को छोड़ दिया था। हम सरकार से बाहर आ गए थे। किस मुद्दे पर आए थे आपको मालूम हैं ना, हमारा मुद्दा यही था पंचायतों के चुनाव कराओ, जम्मू-कश्मीर के गांव-गांव के नागरिकों को उनका हक दो। उनको उनके गांव का फैसला करने की ताकत दो। इस मुद्दे पर हम सरकार छोड़ करके आपके साथ रास्ते पर आकर खड़े हो गए थे और आज मुझे खुशी है कि ब्लॉक स्तर पर, पंचायत स्तर पर या फिर जिला स्तर पर आपने जिन लोगों को चुना है उनमें से ज्यादातर आपके बीच ही रहते हैं, वो आपके बीच से ही निकलकर चुनाव जीते हैं। उन्होंने भी वही परेशानियां उठाई हैं जो आपने उठाई हैं। उनके सुख-दुःख, उनके सपने, उनकी उम्मीदें भी आपके सुख-दुःख, आपके सपनों और उम्मीदों से पूरी तरह मेल खाते हैं। ये वो लोग हैं जो अपने नाम के बल पर नहीं बल्कि अपने काम के बल पर आपका आशीर्वाद ले पाए हैं और आज आपने उनको आपका प्रतिनिधित्व देने का हक दिया है। आज आपने जिन युवाओं को चुना है वो आपके साथ काम करेंगे, आपके लिए काम करेंगे और जो लोग चुन करके आए हैं मैं उनका भी बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं और जो इस बार विजयी नहीं हो पाए हैं उनको भी मैं कहूंगा कि आप निराश मत होना, जनता की सेवा लगातार करते रहना। आज नहीं तो कल आपके नसीब में भी विजय आ सकती है। लोकतंत्र में यही होता है जिसको मौका मिले वो सेवा करे, जिसको मौका न मिले वो सेवा के फल में कोई रह जाता है तो उसके लिए लगातार सक्रिय रहे। आप आने वाले समय में उन्हें अपने क्षेत्र के साथ ही देश के लिए बड़ी भूमिकाओं के लिए भी तैयार कर रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में इन चुनावों ने ये भी दिखाया कि हमारे देश में लोकतंत्र कितना मजबूत है। लेकिन मैं आज देश के सामने एक और पीड़ा भी व्यक्त करना चाहता हूं। जम्मू-कश्मीर ने तो केन्द्र शासित बनने के एक साल के भीतर-भीतर त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था के चुनाव करवा दिए, शांतिपूर्ण करवा दिए और लोगों को उनका हक दे दिया। अब यही चुने हुए लोग जम्मू-कश्मीर के अपने गांवों का, अपने जिले का, अपने ब्लॉक का भविष्य तय करेंगे। लेकिन,

दिल्ली में कुछ लोग सुबह-शाम, आए दिन, मोदी को कोसते रहते हैं, टोकते रहते हैं, अपशब्दों का प्रयोग करते हैं और आए दिन मुझे लोकतंत्र सिखाने के लिए रोज नए-नए पाठ बताते रहते हैं। मैं उन लोगों को जरा आज आइना दिखाना चाहता हूँ। ये जम्मू-कश्मीर देखिए, केन्द्र शासित बनने के इतने कम समय में उन्होंने त्रि-स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को स्वीकार करके काम आगे बढ़ाये। लेकिन दूसरी ओर विडम्बना देखिए, पुडुचेरी में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बावजूद पंचायत और म्युनिसिपल इलेक्शन नहीं हो रहे हैं और जो मुझे यहां रोज लोकतंत्र के पाठ पढ़ाते हैं ना उनकी पार्टी वहां राज कर रही है। आप हैरान होंगे, सुप्रीम कोर्ट ने 2018 में ये आदेश दिया था। लेकिन वहां जो सरकार है, जिसका लोकतंत्र पे रती भर भी भरोसा नहीं है इस मामले को लगातार टाल रही है।

साथियों,

पुडुचेरी में दशकों के इंतजार के बाद साल 2006 में Local Body Polls हुए थे। इन चुनावों में जो चुने गए, उनका कार्यकाल साल 2011 में ही खत्म हो चुका है। कुछ राजनीतिक दलों की कथनी और करनी में कितना बड़ा फर्क है, लोकतंत्र के प्रति वो कितना गंभीर हैं, ये इस बात से भी पता चलता है। इतने साल हो गए, पुडुचेरी में पंचायत वगैराह के चुनाव नहीं होने दिए जा रहे हैं।

भाइयों और बहनों,

केंद्र सरकार ये लगातार कोशिश कर रही है कि गांव के विकास में, गांव के लोगों की भूमिका सबसे ज्यादा रहे। प्लानिंग से लेकर अमल और देख-रेख तक पंचायती राज से जुड़े संस्थानों को ज्यादा ताकत दी जा रही है। आपने भी देखा है, गरीब से जुड़ी जरूरतों को पूरा करने के लिए पंचायतों का दायित्व अब कितना बढ़ा है। इसका लाभ जम्मू कश्मीर में देखने को भी मिल रहा है। जम्मू कश्मीर के गांव-गांव में बिजली पहुंची है। यहां के गांव आज खुले में शौच से मुक्त हो चुके हैं। गांव-गांव तक सड़क पहुंचाने के लिए मनोज जी के नेतृत्व में पूरा प्रशासन कठिनाइयों के बीच भी बहुत तेजी से काम पर लगा हुआ है। हर घर जल पहुंचाने का मिशन जम्मू कश्मीर में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अगले 2-3 साल में राज्य के हर घर तक पाइप से पानी पहुंच जाए, इसके लिए प्रयास किए जा रहे हैं। जम्मू-कश्मीर में लोकल गवर्नेंस का मजबूत होना, डवलपमेंट के कामों में ये बहुत बड़ी तेजी लाएगा।

साथियों,

आज जम्मू-कश्मीर के लोगों का विकास, हमारी सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है। चाहे वो महिला सशक्तिकरण हो, युवाओं के लिए अवसर की बात हो, दलितों-पीड़ितों- शोषितों-वंचितों के कल्याण का लक्ष्य हो या फिर लोगों के संवैधानिक और बुनियादी अधिकार, हमारी सरकार राज्य की भलाई के लिए हर फैसले ले रही है। आज पंचायती राज जैसी लोकतांत्रिक संस्थाएं उम्मीद के इसी सकारात्मक संदेश को बढ़ा रही हैं। आज हम लोगों को ये विश्वास दिलाने में सफल हुए हैं कि परिवर्तन संभव है और ये परिवर्तन उनके चुने हुए पसंदीदा प्रतिनिधि ला सकते हैं। ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र लाकर हम लोगों की आकांक्षाओं को अवसर दे रहे हैं। जम्मू-कश्मीर की अपनी महान विरासत है और इसके शानदार लोग अपने इस क्षेत्र को सशक्त करने के तरीके अपना रहे हैं, नए तरीके सुझा रहे हैं।

साथियों,

जम्मू-कश्मीर की जीवन रेखा कही जाने वाली झेलम नदी में, रावी, व्यास, सतलुज मिलने से पहले कई उपनदियां भी मिलती हैं और फिर ये सारी नदियां महान सिंधु नदी में समा जाती हैं। महान सिंधु नदी हमारी सभ्यता, हमारी संस्कृति और विकास यात्रा का पर्याय है। इसी तरह विकास की क्रांति भी उपनदियों, सहायक नदियों की तरह ही कई धाराओं में आती है और फिर बड़ी धारा बन जाती है। इसी सोच के साथ हम स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी परिवर्तन लाने की कोशिश कर रहे हैं। हमारी सरकार ने कई छोटी-छोटी धाराओं की तरह कई योजनाओं की शुरुआत की है और सबका एक ही लक्ष्य है- स्वास्थ्य के

क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव लाना। जब हमने उज्जवला योजना के तहत देश की बहनों को, बेटियों को गैस कनेक्शन दिया, तो इसे सिर्फ ईंधन पहुंचाने की एक योजना के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए। हमने इसके जरिए अपनी बहनों बेटियों को धुएं से मुक्ति दिलाई, पूरे परिवार के स्वास्थ्य को सुधारने का प्रयास किया। महामारी के दौरान भी यहां जम्मू-कश्मीर में करीब 18 लाख गैस सिलेंडर रिफिल कराए गए। उसी प्रकार से आप स्वच्छ भारत अभियान का ही उदाहरण लीजिए। इस अभियान के तहत जम्मू कश्मीर में 10 लाख से ज्यादा टॉयलेट बनाए गए। लेकिन इसका मकसद सिर्फ शौचालय बनाने तक सीमित नहीं, ये लोगों के स्वास्थ्य को सुधारने की भी कोशिश है। शौचालयों से स्वच्छता तो आई ही है, बहुत सी बीमारियों को भी रोका जा सका है। अब इसी कड़ी में आज जम्मू कश्मीर आयुष्मान भारत-सेहत स्कीम शुरू की गई है। आप सोचिए, जब इस स्कीम के तहत राज्य के प्रत्येक व्यक्ति को, 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिलेगा तो उनके जीवन में कितनी बड़ी सहूलियत आएगी। अभी तक आयुष्मान भारत योजना का लाभ राज्य के करीब 6 लाख परिवारों को मिल रहा था। अब सेहत योजना के बाद यही लाभ करीब-करीब 21 लाख परिवारों को मिलेगा।

साथियों,

बीते 2 सालों में, डेढ़ करोड़ से ज्यादा गरीबों ने आयुष्मान भारत योजना का लाभ उठाया है। इससे जम्मू कश्मीर के लोगों को भी मुश्किल समय में बहुत राहत मिली है। यहां के करीब 1 लाख गरीब मरीजों का अस्पताल में 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज किया गया है। इसमें भी जिन बीमारियों का सबसे ज्यादा इलाज हो रहा है, उसमें कैंसर, हार्ट और ऑर्थो से जुड़ी बीमारियां सबसे ज्यादा हैं। ये ऐसी बीमारियां हैं, जिन पर होने वाला खर्च किसी भी गरीब की नींद उड़ा देता है और हमने तो देखा है कि कोई गरीब परिवार मेहनत करके थोड़ा ऊपर आए और मध्यम वर्गीय और आगे बढ़े और अगर परिवार में कोई अगर एक बीमारी आ जाए तो फिर वो गरीबी के चक्कर में वापस फंस जाता है।

भाइयों-बहनों,

जम्मू-कश्मीर की वादियों में हवा इतनी शुद्ध है, प्रदूषण इतना कम है कि स्वाभाविक रूप से हर कोई चाहता है और मैं तो जरूर चाहूंगा कि आप हमेशा स्वस्थ रहें। हां, अब मुझे ये तसल्ली है कि बीमारी की स्थिति में आयुष्मान भारत- सेहत स्कीम आपकी एक साथी बनकर मौजूद रहेगी।

साथियों,

इस स्कीम का एक और लाभ होगा जिसका जिक्र बार-बार किया जाना जरूरी है। आपका इलाज सिर्फ जम्मू कश्मीर के सरकारी और प्राइवेट अस्पतालों तक सीमित नहीं रहेगा। बल्कि देश में इस योजना के तहत जो हजारों अस्पताल जुड़े हैं, वहां भी ये सुविधा आपको मिल पाएगी। आप मान लीजिए मुम्बई गए हैं और अचानक जरूरत पड़ी तो ये कार्ड मुम्बई में भी आपके काम आएगा। आप चेन्नई गए तो वहां भी ये काम आएगा, वहां के अस्पताल भी मुफ्त में आपकी सेवा करेगी। आप कलकत्ता गए हैं, तो वहां मुश्किल होगा क्योंकि वहां कि सरकार आयुष्मान योजना से नहीं जुड़ी है, कुछ लोग होते हैं क्या करें। देशभर में ऐसे 24 हजार से ज्यादा अस्पताल इस वक्त हैं, जहां सेहत स्कीम के तहत आप इलाज करा पाएंगे। कोई बंदिश नहीं, कोई रोक-टोक नहीं। किसी को कमीशन नहीं, कट का तो नाम और निशान नहीं है, कोई सिफारिश नहीं, कोई भ्रष्टाचार नहीं। सेहत स्कीम का कार्ड दिखाकर, आपको हर जगह इलाज की सुविधा मिल जाएगी।

साथियों,

जम्मू-कश्मीर अब देश के विकास के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल पड़ा है। कोरोना को लेकर भी जिस तरह राज्य में काम हुआ है, वो प्रशंसनीय है। मुझे बताया गया है कि 3 हजार से ज्यादा डॉक्टर, 14 हजार से ज्यादा पैरामेडिकल स्टाफ, आशा कार्यकर्ता, दिनरात जुटे रहे और अब भी जुटे हुए हैं।

आपने बहुत ही कम समय में राज्य के अस्पतालों को कोरोना से लड़ने के लिए भी तैयार किया। ऐसे ही इंतज़ाम के कारण कोरोना के ज्यादा से ज्यादा मरीजों को बचाने में हम कामयाब रहे हैं।

भाइयों और बहनों,

जम्मू कश्मीर में हेल्थ सेक्टर पर आज जितना ध्यान दिया जा रहा है, उतना पहले कभी नहीं दिया गया। आयुष्मान भारत योजना के तहत राज्य में 1100 से ज्यादा हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनाने का लक्ष्य है। इसमें से 800 से ज्यादा पर काम पूरा हो चुका है। जन औषधि केंद्रों पर बहुत ही कम दामों में मिल रही दवाइयों और मुफ्त डायलिसिस की सुविधा ने भी हजारों लोगों को लाभ पहुंचाया है। जम्मू और श्रीनगर डिविजन में दोनों जगह 2 कैंसर इंस्टीट्यूट्स भी बनाए जा रहे हैं। दो एम्स का काम भी तेज़ी से चल रहा है। नौजवानों को मेडिकल और पैरामेडिकल एजुकेशन के लिए जम्मू कश्मीर में ही ज्यादा से ज्यादा मौके मिले, इसके लिए भी काम हो रहा है। जम्मू कश्मीर में 7 नए मेडिकल कॉलेज को मंजूरी मिल चुकी है। इससे MBBS की सीटें दोगुनी से भी ज्यादा होने वाली हैं। इसके अलावा जिन 15 नए नर्सिंग कॉलेजों को मंजूरी दी गई है, उनसे युवाओं के लिए नए अवसर बनेंगे। इसके अलावा जम्मू में IIT और IIM की स्थापना भी यहां के नौजवानों को Higher Education के बेहतर मौके उपलब्ध कराएगी। राज्य में स्पोर्ट्स फेसिलिटी बढ़ाने के लिए जो परियोजनाएं शुरू हुई हैं, वो यहां के टैलेंट को स्पोर्ट्स की दुनिया में छा जाने में मदद करेगी।

भाइयों और बहनों,

हेल्थ के साथ ही दूसरे इंफ्रास्ट्रक्चर में भी नए जम्मू कश्मीर के कदम तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। पिछले 2-3 साल में इसको लेकर कैसे तेज़ी आई है, इसका एक बेहतरीन उदाहरण हाइड्रो पावर है। 7 दशकों में जम्मू कश्मीर में साढ़े 3 हजार मेगावॉट बिजली की कैपेसिटी तैयार हुई थी। बीते 2-3 सालों में ही इसमें 3 हजार मेगावॉट कैपेसिटी हमने और जोड़ दी है। Prime Ministers Development Package के तहत चल रहे प्रोजेक्ट्स पर भी अब काम बहुत तेज़ी से हो रहा है। खासतौर पर कनेक्टिविटी से जुड़े प्रोजेक्ट्स से राज्य की तस्वीर और तकदीर दोनों बदलने वाली है। मैंने चिनाब पर बन रहे बेहतरीन रेलवे ब्रिज की तस्वीरें देखी हैं और आजकल तो सोशल मीडिया पर शायद हिन्दुस्तान के हर किसी ने देखी होंगी। उन तस्वीरों को देखकर किस नागरिक का माथा गर्व से ऊंचा नहीं होगा। रेलवे का पूरा जोर है कि अगले 2-3 साल में वैली रेलवे से कनेक्ट हो जाए। जम्मू और श्रीनगर में लाइट रेल ट्रांज़िट मेट्रो को लेकर भी बात आगे बढ़ रही है। बनिहाल टनल को भी अगले साल तक पूरा करने की कोशिश की जा रही है। जम्मू में जो सेमी रिंग रोड का काम चल रहा है, उसे भी जल्द से जल्द पूरा करने में सरकार जुटी हुई है।

साथियों,

कनेक्टिविटी जब बेहतर होती है तो इससे टूरिज्म और इंडस्ट्री दोनों को बल मिलता है। टूरिज्म जम्मू की भी ताकत रहा है और कश्मीर की भी ताकत रहा है। कनेक्टिविटी की जिन योजनाओं पर सरकार काम कर रही है, उससे जम्मू को भी लाभ होगा और कश्मीर को भी लाभ होगा। कालीन से लेकर केसर तक, सेब से लेकर बासमती तक जम्मू कश्मीर में क्या नहीं है? कोरोना की वजह से हुए लॉकडाउन के दौरान भी सरकार ने इस बात का ध्यान रखा कि यहां के apple किसानों को दिक्कत कम से कम हो। बाजार में सही तरीके से समय पर माल पहुंचे, हमारी सरकार ने कुछ महीने पहले ये निर्णय भी लिया कि apple की खरीद के लिए Market Intervention Scheme को पिछले साल की तरह ही इस साल भी लागू रखा जाएगा। इसके तहत सरकार द्वारा apple की खरीद, नाफेड के माध्यम से और सीधे किसानों से की जा रही है। जो apple खरीदा जा रहा है, उसका भुगतान भी Direct Benefit Transfer के जरिए सीधे किसानों के बैंक खातों में किया जा रहा है। इस स्कीम के तहत 12 लाख मीट्रिक टन apple खरीदा जा सका है और ये जम्मू-कश्मीर के किसानों को एक प्रकार से बहुत बड़ी सुविधा हुई है।



हमारी सरकार ने नाफेड को इस बात के लिए भी स्वीकृति दी है कि वो 2500 करोड़ रुपये की सरकारी गारंटी का उपयोग कर सके। apple की खरीद के लिए, आधुनिक मार्केटिंग प्लेटफार्म उपलब्ध कराने के लिए, ट्रांसपोर्टेशन की सुविधाएं बढ़ाने पर सरकार ने लगातार प्रगति की है। apple की स्टोरेज के लिए सरकार जो सहायता कर रही है, उससे भी किसानों को बहुत लाभ हुआ है। यहां पर नए किसान उत्पादक संघ- FPO's का निर्माण हो, अधिकतम बनें, इसके लिए भी लगातार प्रशासन प्रयास कर जा रहा है। नए कृषि सुधारों ने जम्मू में भी और घाटी में भी, दोनों जगह फूड प्रोसेसिंग इंडस्ट्री के लिए नए अवसर बना दिए हैं। इससे हजारों लोगों को, रोजगार और स्वरोजगार के मौके मिलने वाले हैं।

भाइयों और बहनों,

आज जम्मू-कश्मीर में जहां एक तरफ हजारों सरकारी नौकरियां नोटिफाई की जा रही हैं, वहीं दूसरी तरफ स्वरोजगार के लिए भी कदम उठाए जा रहे हैं। बैंकों के ज़रिए अब जम्मू कश्मीर के नौजवान कारोबारियों को आसानी से लोन मिलना शुरू हुआ है। इसमें भी हमारी बहनें, जो सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से जुड़ी हैं, वो ज्यादा से ज्यादा संख्या में आगे आ रही हैं।

साथियों,

पहले देश के लिए अधिकतर जो स्कीम बनती थी, जो कानून बनते थे, उनमें लिखा होता था-Except (एक्सेप्ट) J and K. अब ये इतिहास की बात हो चुकी है। शांति और विकास के जिस मार्ग पर जम्मू और कश्मीर बढ़ रहा है, उसने राज्य में नए उद्योगों के आने का मार्ग भी बनाया है। आज जम्मू-कश्मीर आत्मनिर्भर भारत अभियान में अपना योगदान दे रहा है। पहले 170 से ज्यादा सेंट्रल लॉ जो पहले एप्लीकेबल नहीं थे वो अब एडमिनिस्ट्रेशन का हिस्सा हैं। जम्मू-कश्मीर के नागरिकों का हक का अवसर है।

साथियों,

हमारी सरकार के फैसलों के बाद, पहली बार जम्मू कश्मीर के गरीब सामान्य वर्ग को आरक्षण का लाभ मिला है। पहली बार पहाड़ी लोगों को आरक्षण का लाभ मिला है। अंतरराष्ट्रीय सीमा पर रहने वालों को भी 4 प्रतिशत आरक्षण का लाभ हमारी सरकार ने दिया है। फारेस्ट एक्ट लागू होने से भी लोगों को नए अधिकार मिले हैं। इससे गुज्जर बकरवाल, अनुसूचित जनजातियों और पारंपरिक रूप से जंगलों के आसपास रहने वालों को जंगल की जमीन के इस्तेमाल का कानूनी अधिकार मिला है। अब किसी के साथ भी भेदभाव की गुंजाइश नहीं है। जम्मू कश्मीर में दशकों से रह रहे साथियों को Domicile Certificate भी दिए जा रहे हैं। यही तो है सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास।

साथियों,

सीमा पार से होने वाली शेलिंग हमेशा से चिंता का विषय रही है। शेलिंग की समस्या के समाधान के लिए बॉर्डर पर बंकर बनाने का काम तेज गति से किया जा रहा है। सांबा, पुंछ, जम्मू, कठुआ और राजौरी जैसी संवेदनशील जगहों पर बड़ी तादाद में ना सिर्फ बंकर बनाए गए हैं बल्कि नागरिकों के सुरक्षा के लिए सेना और सुरक्षाबलों को भी खुली छूट दी गई है।

साथियों,

हमारे देश में जिन लोगों ने दशकों तक शासन किया, उनकी एक बहुत बड़ी भूल ये भी रही है कि उन्होंने देश के सीमावर्ती यानी सीमा के पास के इलाकों के विकास को पूरी तरह नजरअंदाज किया। उनकी सरकारों की इस मानसिकता ने जम्मू-कश्मीर हो या नॉर्थ ईस्ट हो, इन क्षेत्रों को पिछड़ेपन में रहने के लिए मजबूर कर दिया है। जीवन की बुनियादी जरूरतें, एक सम्मानजनक जीवन की जरूरतें, विकास की जरूरतें, यहां के सामान्य मानवी तक उतनी पहुंची ही नहीं, जितनी पहुंचनी चाहिए थीं। ऐसी

मानसिकता कभी भी देश का संतुलित विकास नहीं कर सकती। ऐसी नकारात्मक सोच की हमारे देश में कोई जगह नहीं। न सीमा के पास न सीमा से दूर। हमारी सरकार की प्रतिबद्धता है कि देश का कोई भी क्षेत्र विकास की धारा में अब और वंचित नहीं रहेगा। ऐसे क्षेत्रों में लोगों का बेहतर जीवन भारत की एकता और अखंडता को भी मज़बूती देगा।

साथियों,

देश के हर क्षेत्र का विकास हो, जम्मू का विकास हो, कश्मीर का विकास हो, हमें निरंतर इसके लिए काम करना है। एक बार फिर मैं श्रीमान मनोज सिन्हा जी को और उनकी टीम को आज जरूर बधाई देना चाहूंगा जब मैं अभी मनोज जी का भाषण सुन रहा था, कितने काम उन्होंने गिनाए और जम्मू-कश्मीर के लोगों के बीच में खड़े रहकर के गिनाए हैं। जिस तेजी से काम हो रहे हैं, पूरे देश के अंदर एक नया विश्वास, नई आशा पैदा करेंगे और मुझे विश्वास है जम्मू-कश्मीर के नागरिकों का कई दशकों का जो काम अधूरा रहा है वो मनोज जी और वर्तमान की प्रशासन टीम के माध्यम से अवश्य पूरा होगा, समय से पहले पूरा होगा। ऐसा मेरा पूरा विश्वास है। एक बार फिर आप सभी को सेहत स्कीम के लिए, आयुष्मान भारत योजना के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। माता वैष्णो देवी और बाबा अमरनाथ की कृपा हम सभी पर बनी रहे। यही अपेक्षा के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!

\*\*\*

डीएस/एमजी/एएम/एसके

(रिलीज़ आईडी: 1683909) आगंतुक पटल : 261

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Tamil , Telugu , Kannada , Malayalam

प्रधानमंत्री कार्यालय

# एम्स राजकोट, गुजरात के शिलान्यास समारोह में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 31 DEC 2020 3:09PM by PIB Delhi

नमस्कार!

केम छै, गुजरात में ठण्डी वण्डी छै के नहीं, गुजरात के राज्यपाल आचार्य देबव्रत जी, मुख्यमंत्री श्रीमान विजय रुपानी जी, विधानसभा स्पीकर श्री राजेंद्र त्रिवेदी, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री डॉ. हर्षवर्धन जी, डिप्टी सीएम भाई नितिन पटेल जी, मंत्रिमंडल में मेरे साथी श्रीमान अश्विनी चौबे जी, मनसुख भाई मांडविया जी, पुरुषोत्तम रुपाला जी, गुजरात सरकार में मंत्री श्री भूपेंद्र सिंह चुड़ासमा जी, श्री किशोर कनानी जी, अन्य सभी मंत्रीगण, सांसदगण, धारासभ्यगण, अन्य सभी महानुभव।

भाइयों और बहनों,

नया साल दस्तक दे रहा है। आज देश के मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने वाली एक और कड़ी जुड़ रही है। राजकोट में All India Institute of Medical Sciences का शिलान्यास गुजरात के साथ-साथ पूरे देश में स्वास्थ्य और मेडिकल एजुकेशन के नेटवर्क को उसके कारण बल मिलेगा। भाइयों और बहनों, साल 2020 को एक नई नेशनल हेल्थ फेसिलिटी के साथ विदाई देना, इस साल की चुनौतियों को भी दर्शाता है और नए साल की प्राथमिकताओं को भी स्पष्ट करता है। ये साल पूरी दुनिया के लिए स्वास्थ्य के रूप में अभूतपूर्व चुनौतियों का साल रहा है। इस साल ने दिखाया है कि स्वास्थ्य ही संपदा है, ये कथा हमें हमारे पूर्वजों ने क्यों सिखाई है, ये हमें बार-बार क्यों रटाया गया है ये 2020 ने हमें भलिभांति सिखा दिया है। स्वास्थ्य पर जब चोट होती है तो जीवन का हर पहलू बुरी तरह से प्रभावित होता है और सिर्फ परिवार नहीं पूरा सामाजिक दायरा उसकी लपेट में आ जाता है और इसलिए साल का ये अंतिम दिन भारत के उन लाखों Doctors, Health Warriors, सफाई कर्मियों, दवा दुकानों में काम करने वाले और दूसरे फ्रंटलाइन कोरोना योद्धाओं को याद करने का है, जो मानवता की रक्षा के लिए लगातार अपने जीवन को दांव पर लगा रहे हैं। कर्तव्य पथ पर जिन साथियों ने अपना जीवन दे दिया है, मैं आज उन सबको आदरपूर्वक नमन करता हूं। आज देश उन साथियों को, उन वैज्ञानिकों को, उन कर्मचारियों को भी बार-बार याद कर रहा है, जो कोरोना से लड़ाई के लिए ज़रूरी मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करने में दिन रात जुटे रहे हैं। आज का दिन उन सभी साथियों की सराहना का है जिन्होंने इस मुश्किल दौर में गरीब तक भोजन और दूसरी सुविधाएं पहुंचाने में पूरे समर्पण के साथ काम किया। इतना लम्बा समय, इतनी बड़ी आपदा लेकिन ये समाज की संगठित सामूहिक ताकत, समाज का सेवाभाव, समाज की संवेदनशीलता उसी का नीतजा है कि देशवासियों ने किसी गरीब को भी इस कठिनाई भरे दिनों में रात को भूखा सोने नहीं दिया। ये सब नमन के पात्र हैं, आदर के पात्र हैं।

साथियों,

मुश्किल भरे इस साल ने दिखाया है कि भारत जब एकजुट होता है तो मुश्किल से मुश्किल संकट का सामना वो कितने प्रभावी तरीके से कर सकता है। भारत ने एकजुटता के साथ जिस प्रकार समय पर प्रभावी कदम उठाए हैं, उसी का परिणाम है कि आज हम बहुत बेहतर स्थिति में हैं। जिस देश में 130 करोड़ से ज्यादा लोग हों, घनी आबादी हो, वहां करीब-करीब एक करोड़ लोग इस बीमारी से लड़कर जीत चुके हैं। कोरोना से पीड़ित साथियों को बचाने का भारत का रिकॉर्ड दुनिया से बहुत बेहतर रहा है। वहीं अब संक्रमण के मामले में भी भारत लगातार नीचे की तरफ जा रहा है।

भाइयों और बहनों,

साल 2020 में संक्रमण की निराशा थी, चिंताएं थी, चारों तरफ सवालिया निशान थे 2020 की वो पहचान बन गई लेकिन 2021 इलाज की आशा लेकर आ रहा है। वैक्सीन को लेकर भारत में हर ज़रूरी तैयारियां चल रही हैं। भारत में बनी वैक्सीन तेज़ी से हर ज़रूरी वर्ग तक पहुंचे, इसके लिए कोशिशें अंतिम चरणों में हैं। दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चलाने के लिए भारत की तैयारी जोरों पर है। मुझे विश्वास है कि जिस तरह बीते साल संक्रमण से रोकने के लिए हमने एकजुट होकर प्रयास किए, उसी तरह टीकाकरण को सफल बनाने के लिए भी पूरा भारत एकजुटता से आगे बढ़ेगा।

साथियों,

गुजरात में भी संक्रमण को रोकने के लिए और अब टीकाकरण के लिए तैयारियों को लेकर प्रशंसनीय काम हुआ है। बीते 2 दशकों में जिस प्रकार का मेडिकल इंफ्रास्ट्रक्चर गुजरात में तैयार हुआ है, वो एक बड़ी वजह है कि गुजरात कोरोना चुनौती से बेहतर तरीके से निपट पा रहा है। एम्स राजकोट गुजरात के हेल्थ नेटवर्क को और सशक्त करेगा, मजबूत करेगा। अब गंभीर से गंभीर बीमारियों के लिए राजकोट में ही आधुनिक सुविधा उपलब्ध हो रही है। इलाज और शिक्षा के अलावा इससे रोज़गार के भी अनेक अवसर तैयार होंगे। नए अस्पताल में काम करने वाले लगभग 5 हजार सीधे रोज़गार उपलब्ध होंगे। इसके साथ-साथ रहन-सहन, खाने-पीने, ट्रांसपोर्ट, दूसरी मेडिकल सुविधाओं से जुड़े अनेक अप्रत्यक्ष रोज़गार भी यहां बनेंगे और हमने देखा है कि जहां बड़ा अस्पताल होता है उसके बाहर एक छोटा शहर ही बस जाता है।

भाइयों और बहनों,

मेडिकल सेक्टर में गुजरात की इस सफलता के पीछे दो दशकों का अनवरत प्रयास है, समर्पण और संकल्प है। बीते 6 सालों में पूरे देश में जिस इलाज और मेडिकल एजुकेशन को लेकर जिस स्केल पर काम हुआ है, उसका निश्चित लाभ गुजरात को भी मिल रहा है।

साथियों,

बड़े अस्पतालों की स्थिति, उन पर दबाव से आप भी भली भांति परिचित हैं। स्थिति ये थी कि आज़ादी के इतने दशकों बाद भी देश में सिर्फ 6 एम्स ही बन पाए थे। 2003 में अटल जी की सरकार ने 6 और एम्स बनाने के लिए कदम उठाए थे। उनके बनाते-बनाते 2012 आ गया था, यानी 9 साल लग गए थे। बीते 6 सालों में 10 नए AIIMS बनाने पर काम शुरू कर चुके हैं, जिनमें से कई आज पूरी तरह से काम शुरू कर चुके हैं। एम्स के साथ-साथ देश में 20 एम्स जैसे ही सुपर स्पेशिएलिटी हॉस्पिटल्स का निर्माण भी किया जा रहा है।

साथियों,

साल 2014 से पहले हमारा हेल्थ सेक्टर अलग-अलग दिशा में, अलग-अलग अप्रोच के साथ काम कर रहा था। प्राइमरी हेल्थकेयर का अपना सिस्टम था। गांवों में सुविधाएं न के बराबर थीं। हमने हेल्थ सेक्टर में हॉलिस्टिक तरीके से काम करना शुरू किया। हमने जहां एक तरफ प्रिवेंटिव केयर पर बल दिया वहीं इलाज की आधुनिक सुविधाओं को भी प्राथमिकता दी। हमने जहां गरीब का इलाज पर होने वाला खर्च कम किया, वहीं इस बात पर भी जोर दिया कि डॉक्टरों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो।

साथियों,

आयुष्मान भारत योजना के तहत देशभर के दूर-दराज के इलाकों में लगभग डेढ़ लाख हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर बनाने के लिए काम तेजी से चल रहा है। अभी तक इनमें से 50 हजार सेंटर सेवा देना शुरू भी कर चुके हैं, जिसमें लगभग 5 हजार गुजरात में ही हैं। इस योजना से अब तक देश के करीब डेढ़ करोड़ गरीबों को 5 लाख रुपये तक का मुफ्त इलाज मिला है। इस योजना ने गरीब भाई-बहनों की कितनी बड़ी मदद की है उसके लिए एक आंकड़ा में देश को बताना चाहता हूं।

साथियों,

आयुष्मान भारत योजना से गरीबों के लगभग 30 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा बचे हैं। 30 हजार करोड़ रुपए ये बहुत बड़ी रकम है। आप सोचिए, इस योजना ने गरीबों को कितनी बड़ी आर्थिक चिंता से मुक्त किया है। कैंसर हो, हार्ट की प्रॉब्लम हो, किडनी की परेशानी हो, अनेकों गंभीर बीमारियों का इलाज, मेरे देश के गरीबों ने मुफ्त कराया है और वी भी अच्छे अस्पतालों में।

साथियों,

बीमारी के दौरान, गरीबों का एक और साथी हैं- जन औषधि केंद्र। देश में लगभग 7 हजार जन औषधि केंद्र, गरीबों को बहुत ही कम कीमत पर दवाइयां उपलब्ध करा रहे हैं। इन जन औषधि केंद्रों पर दवाइयां करीब-करीब 90 प्रतिशत तक सस्ती होती हैं। यानि सौ रुपए की दवाई दस रुपए में मिलती है। साढ़े 3 लाख से ज्यादा गरीब मरीज, हर रोज इन जन औषधि केंद्रों का लाभ ले रहे हैं और इन केंद्रों की सस्ती दवाइयों की वजह से गरीबों के हर साल औसतन 3600 करोड़ रुपए खर्च होने से बच रहे हैं। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कितनी बड़ी मदद हो रही है। वैसे कुछ लोगों के मन में सवाल उठ सकता है कि आखिर सरकार इलाज का खर्च कम करने, दवाइयों पर होने वाले खर्च को कम करने पर इतना जोर क्यों दे रही है?

साथियों,

हम से अधिकांश, उसी पृष्ठभूमि से निकले लोग हैं। गरीब और मध्यम वर्ग में इलाज का खर्च हमेशा से बहुत बड़ी चिंता रहा है। जब किसी गरीब को गंभीर बीमारी होती है, तो इस बात की संभावना बहुत ज्यादा होती है कि वो अपना इलाज कराए ही नहीं। इलाज के लिए पैसे न होना, घर के अन्य खर्च, अपनी जिम्मेदारियों की चिंता, व्यक्ति के व्यवहार में ये बदलाव ला ही देती है और हमने देखा है जब गरीब बीमार हो जाता है पैसे नहीं होते हैं तो वो क्या करता है डोरे- धागे की दुनिया में चला जाता है, पूजा – पाठ की दुनिया में चला जाता है। उसको लगता है शायद वहीं से बच जाऊंगा लेकिन वो इसलिए जाता है कि उसके पास सही जगह पर जाने के लिए पैसे नहीं है, गरीबी उसको परेशान कर रही है।

साथियों,

हमने यह भी देखा है कि जो व्यवहार पैसे की कमी की वजह से बदलता है, वही व्यवहार जब गरीब के पास एक सुरक्षा कवच होता है, तो वो एक आत्मविश्वास में बदल जाता है। आयुष्मान भारत योजना के तहत गरीबों का इलाज लोगों की इस चिंता, इस व्यवहार को बदलने में सफल रहा है। जिसमें वो पैसे की कमी की वजह से अपना इलाज कराने अस्पताल जाते ही नहीं थे। और कभी-कभी तो मैंने देखा है कि घर के जो बुजुर्ग हैं ज्यादा बुजुर्ग नहीं 45-50 साल की आयु, बड़े व्यक्ति वे इसलिए दवाई नहीं कराते वो कहते हैं कर्ज हो जाएगा तो सारा कर्ज बच्चों को देना पड़ेगा और बच्चे बर्बाद हो जाएंगे। बच्चों की जिंदगी बरबाद न हो इसलिए कई मां-बाप जीवनभर दर्द झेलते हैं और दर्द में ही मरते हैं। क्योंकि कर्ज न हो, दर्द झेलें लेकिन बच्चों के नसीब में कर्ज न आये इसलिए वो ट्रीटमेंट नहीं कराते हैं। खासकर ये भी सही है कि प्राइवेट हॉस्पिटल जाने की तो गरीब पहले कभी सोच ही नहीं पाता था। आयुष्मान भारत के बाद अब ये भी बदल रहा है।

साथियों,

अपने स्वास्थ्य की सुरक्षा का ऐहसास, इलाज के लिए पैसे की उतनी चिंता का न होना, इसने समाज की सोच को बदल दिया है और हम इसके नतीजे भी देख रहे हैं। आज Health और Wellness को लेकर एक सतर्कता आई है, गंभीरता आई है। और ये सिर्फ शहरों में हो रहा हो, ऐसा नहीं है। दूर-सुदूर हमारे देश के गांवों में भी ये जागरूकता हम देख रहे हैं। व्यवहार में परिवर्तन के ऐसे उदाहरण अन्य क्षेत्रों में भी नजर आ रहे हैं। जैसे शौचालयों की उपलब्धता ने, लोगों को स्वच्छता के लिए और जागरूक किया है। हर घर जल अभियान लोगों को स्वच्छ पानी सुनिश्चित कर रहा है, पानी से होने वाली बीमारियों को कम कर रहा है। रसोई में गैस पहुंचने के बाद न सिर्फ हमारी बहनों-बेटियों का स्वास्थ्य सुधर रहा है बल्कि पूरे परिवार में एक सकारात्मक सोच आई है। ऐसे ही प्रधानमंत्री

सुरक्षित मातृत्व अभियान ने गर्भवती महिलाओं को रेगुलर चेक-अप के लिए प्रोत्साहित किया है। और चेक-अप के कारण उनको पहले से गंभीरता की तरफ इंगित कर दिया जाता इसका लाभ ये हो रहा है कि गर्भावस्था के दौरान जो कॉम्प्लीकेटेड केसेस होते हैं, वो जल्दी पकड़ में आते हैं और उनका समय पर इलाज भी होता है। वहीं प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के द्वारा ये सुनिश्चित किया जा रहा है कि गर्भवती महिलाओं को पर्याप्त पोषण मिले, देखभाल मिले। पोषण अभियान ने भी उनमें जागरूकता बढ़ाई है। इन सारे प्रयासों का एक बहुत बड़ा लाभ ये मिला है कि देश में माता मृत्यु दर पहले के मुकाबले काफी कम हो रहा है।

साथियों,

सिर्फ Outcome- परिणाम पर ही फोकस करना काफी नहीं होता है। Impact- महत्वपूर्ण है, लेकिन implementation भी उतना ही महत्वपूर्ण है और इसलिए, मैं समझता हूँ कि व्यवहार में व्यापक परिवर्तन लाने के लिए हमें सबसे पहले प्रक्रिया में सुधार करना आवश्यक होता है। बीते वर्षों में देश ने इस पर बहुत जोर दिया गया है। इसका नतीजा ये है हम देख रहे हैं कि देश हेल्थ सेक्टर में जहाँ जमीनी स्तर पर बदलाव आ रहा है, और लोगों को जो सबसे बड़ी चीज मिली है वो है ACCESS, स्वास्थ्य सुविधाओं तक उनकी पहुंच। और मैं स्वास्थ्य और शिक्षा के एक्सपर्ट्स से आज ये भी आग्रह करूंगा कि वो सरकार की इन योजनाओं का, बेटियों की एजुकेशन पर जो प्रभाव पड़ा है, उसका जरूरत अध्ययन करें। ये योजनाएं, ये जागरूकता, एक बड़ी वजह है जो स्कूलों में बेटियों के ड्रॉपआउट रेट में कमी ला रही है।

साथियों,

देश में मेडिकल एजुकेशन को बढ़ावा देने के लिए भी मिशन मोड पर काम चल रहा है। मेडिकल एजुकेशन की मैनेजमेंट से जुड़ी संस्थाओं में रिफॉर्म्स किए। पारंपरिक भारतीय चिकित्सा से जुड़ी शिक्षा में भी ज़रूरी रिफॉर्म्स किए। नेशनल मेडिकल कमीशन बनने के बाद हेल्थ एजुकेशन में क्वालिटी भी बेहतर होगी और क्वांटिटी को लेकर भी प्रगति होगी। ग्रेजुएट्स के लिए National Exit Test उसके साथ-साथ 2 साल का Post MBBS Diploma हो, या फिर पोस्ट ग्रेजुएट डॉक्टर्स के लिए District Residency स्कीम हो, ऐसे नए कदमों से ज़रूरत और गुणवत्ता दोनों स्तर पर काम किया जा रहा है।

साथियों,

लक्ष्य ये है कि हर राज्य तक AIIMS पहुंचे और हर 3 लोकसभा क्षेत्र के बीच में एक मेडिकल कॉलेज ज़रूर हो। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि बीते 6 साल में MBBS में 31 हजार नई सीटें और पोस्ट ग्रेजुएट में 24 हजार नई सीटें बढ़ाई गई हैं। साथियों, हेल्थ सेक्टर में भारत जमीनी स्तर पर बड़े परिवर्तन की ओर बढ़ रहा है। अगर 2020 health challenges का साल था, तो 2021 health solutions का साल होने वाला है। 2021 में विश्व, स्वास्थ्य को लेकर और ज्यादा जागरूक होकर समाधानों की तरफ बढ़ेगा। भारत ने भी जिस तरह 2020 में health challenges से निपटने में अपना योगदान दिया है, वो दुनिया ने देखा है। मैंने शुरू में इसका जिक्र भी किया है।

साथियों,

भारत के ये योगदान 2021 में health solutions के लिए, solutions की scaling के लिए महत्वपूर्ण होने वाला है। भारत, Future of health और health of future, दोनों में ही सबसे महत्वपूर्ण रोल निभाने जा रहा है। यहाँ दुनिया को competent medical professionals भी मिलेंगे, उनका सेवा भाव भी मिलेगा। यहाँ, दुनिया को mass immunization का experience भी मिलेगा और expertise भी मिलेगी। यहाँ दुनिया को health solutions और technology को integrate करने वाले startups और startup ecosystem भी मिलेगा। ये Startups healthcare को accessible भी बना रहे हैं और health outcomes को improve भी कर रहे हैं।

साथियों,



आज हम सब ये देख रहे हैं कि बीमारियाँ अब कैसे globalised हो रही हैं। इसलिए, ये समय है कि health solutions भी globalised हों, दुनिया एक साथ आकर प्रयास करे, respond करे। आज अलग-थलग प्रयास, silos में काम करना, ये रास्ता काम आने वाला नहीं है। रास्ता है सबको साथ लेकर चलना, सबके लिए सोचना और भारत आज एक ऐसा ग्लोबल प्लेयर है जिसने ये करके दिखाया है। भारत ने demand के मुताबिक 'Adapt, Evolve and Expand' करने की अपनी क्षमता को साबित किया है। हम दुनिया के साथ आगे बढ़े, collective efforts में value addition किया, और हर चीज से ऊपर उठकर हमने सिर्फ मानवता को केंद्र में रखा, मानवता की सेवा की। आज भारत के पास क्षमता भी है, और सेवा की भावना भी है। इसीलिए, भारत ग्लोबल हेल्थ का nerve centre बनकर उभर रहा है। 2021 में हमें भारत की इस भूमिका को और मजबूत करना है।

साथियों,

हमारे यहाँ कहते हैं- 'सर्वम् अन्य परित्यज्य शरीरम् पालयेदतः'॥ यानि सबसे बड़ी प्राथमिकता शरीर के स्वास्थ्य की रक्षा ही है। सब कुछ छोड़कर पहले स्वास्थ्य की ही चिंता करनी चाहिए। नए साल में हमें इस मंत्र को अपने जीवन में प्राथमिकता के साथ उतारना है। हम स्वस्थ रहेंगे तो देश स्वस्थ रहेगा, और हम ये भी जानते हैं जो Fit India Movement चल रहा है, वि सिर्फ नौजवानों के लिए है ऐसा नहीं है, हर उम्र के लोग ये Fit India Movement से जुड़ने चाहिए और ये मौसम भी Fit India के अपने Movement को गति देने के लिए बहुत अच्छा है। कोई परिवार ऐसा न हो चाहे योग की बात हो, चाहे Fit India की बात हो, हमें अपने आपको स्वस्थ रखना ही होगा। बीमार होने के बाद जो परेशानियाँ होती हैं, स्वस्थ रखने के लिए उतने प्रयत्न नहीं करने पड़ते। और इसलिए Fit India इस बात को हम हमेशा याद रखें अपने आप को Fit रखें, अपने देश को Fit रखें, ये भी हम लोगों का कर्तव्य है। राजकोट के मेरे प्यारे भाईयों-बहनों, गुजरात के मेरे प्यारे भाइयों-बहनों ये बात न भूलें, कि कोरोना संक्रमण घट ज़रूर रहा है, लेकिन ये ऐसा वायरस है जो तेज़ी से फिर चपेट में ले लेता है। इसलिए दो गज़ की दूरी, मास्क और सेनिटेशन के मामले में ठील बिल्कुल नहीं देनी है। नया साल हम सभी के लिए बहुत खुशियाँ लेकर आए। आपके लिए और देश के लिए नया साल मंगल हो। लेकिन मैं ये भी कहूँगा, मैं पहले कहता था जब तक दवाई नहीं, तब तक ढिलाई नहीं, बार-बार कहता था। अब दवाई सामने दिख रही है। कुछ ही समय का सवाल है तो भी मैं कहूँगा, पहले मैं कहता था दवाई नहीं तो ढिलाई नहीं, लेकिन अब मैं फिर से कह रहा हूँ, दवाई भी और कड़ाई भी। कड़ाई भी बरतनी है और दवाई भी लेनी है। दवाई आ गई तो सब छूट मिल गई, ये भ्रम में मत रहना। दुनिया यही कहती है, वैज्ञानिक यही कहते हैं और इसलिए अब मंत्र रहेगा हमारा 2021 का, दवाई भी और कड़ाई भी।

दूसरी एक बात हमारे देश में अफवाहों का बाजार जरा तेज़ रहता है। भाति-भाति के लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए कभी गैर-जिम्मा व्यवहार के लिए भाति – भाति अफवाहें फैलाते हैं। हो सकता है जब वैक्सीन का काम प्रारंभ हो तो भी अफवाहों का बाजार भी उतना ही तेज़ चलेगा। किसी को बुरा दिखाने के लिए सामान्य मानवीय का कितना नुकसान हो रहा है इसकी परवाह किये बिना न जाने अनगिनत काल्पनिक झूठ फैलाए जाएंगे। कुछ मात्रा में तो शुरू भी हो चुके हैं, और भोले-भाले गरीब लोग या कुछ बद इरादे से काम करने वाले लोग बड़े conviction के साथ इसको फैलाते हैं। मेरा देशवासियों से आग्रह होगा कि कोरोना के खिलाफ एक अन्जान दुश्मन के खिलाफ लड़ाई है। अफवाहों के बाजार गर्म न होने दें, हम भी सोशल मीडिया पर कुछ भी देखा, फारवर्ड न करें। हम भी एक जिम्मेवार नागरिक के रूप में आने वाले दिनों में देश के अंदर स्वास्थ्य का जो अभियान चलेगा, हम सब अपनी तरफ से योगदान दें। सब अपनी तरफ से जिम्मेवारी उठाएं और जिन लोगों के लिए पहले ये बात पहुंचानी है उनमें हम पूरी मदद करें जैसे ही वैक्सीन का मामला आगे बढ़ेगा देशवासियों को समय पर उसकी सूचना मिलेगी। मैं फिर से एक बार 2021 के लिए आप सबको बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ।

धन्यवाद!

\*\*\*\*\*

DS/VJ/BM/DK

(रिलीज़ आईडी: 1685067) आगंतुक पटल : 402

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Urdu , Marathi , Bengali , Manipuri , Assamese , Punjabi , Gujarati , Odia , Telugu , Kannada , Malayalam